(२) वह भी समय होगा जब काफ़िर अपने मुसलमान होने की कामना करेंगे ।[1]

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ۝٢

(३) आप उन्हें खाता, लाभ उठाता तथा (झूठी) आशाओं में लीन होता छोड़ दें, वह स्वयं अभी जान लेंगे ।[2]

ذَرْهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝٣

(४) तथा किसी बस्ती को हमने ध्वस्त नहीं किया, परन्तु यह कि उसके लिए निर्धारित लेख था ।

وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَعْلُومٌ ۝٤

(५) कोई गुट अपनी मृत्यु से न आगे बढ़ता है, न पीछे रहता है ।[3]

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ۝٥

(६) तथा उन्होंने कहा कि हे वह व्यक्ति ! जिसके ऊपर क़ुरआन उतारा गया है, नि:संदेह तू तो कोई दीवाना है ।

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ۝٦

---

[1]यह कामना कब करेंगे ? मृत्यु के समय, जब फ़रिश्ते उन्हें नरक की आग दिखाते हैं अथवा जब नरक में चले जायेंगे अथवा उस समय जब पापी ईमानवालों को कुछ समय नरक में रखकर उसके पश्चात उन्हें वहाँ से निकाला जायेगा अथवा महशर के मैदान में, जहाँ हिसाब-किताब हो रहा होगा तथा काफ़िर देखेंगे कि मुसलमान स्वर्ग में जा रहे हैं, तो कामना करेंगे कि यदि वे भी मुसलमान होते । رُبَمَا का अर्थ वास्तव में तो अधिकता है परन्तु कभी-कमी के लिये भी प्रयोग होता है । कुछ विद्वान कहते हैं कि उनकी यह कामना प्रत्येक अवसर पर होती रहेगी, परन्तु उसका उन्हें कोई लाभ न होगा ।

[2]यह धमकी तथा फटकार है कि ये काफ़िर (अधर्मी) तथा मूर्तिपूजक (बहुदेववादी) अपने कुफ़्र तथा मूर्तिपूजन से न रूकें तो उन्हें छोड़ दीजिये, यह सांसारिक सुखों का भोग कर लें तथा अपनी आशाओं की पूर्ति कर लें । निकट भविष्य में उन्हें अपने कुफ़्र तथा मूर्तिपूजन का परिणाम ज्ञात हो जायेगा ।

[3]जिस बस्ती को भी अवज्ञा के कारण ध्वस्त करते हैं, तो शीघ्र ही नहीं करते, बल्कि हमने एक समय निर्धारित कर रखा है, उस समय तक उस बस्ती वालों को अवसर प्रदान किया जाता है, परन्तु जब वह निर्धारित समय आ जाता है, तो उन्हें नष्ट कर दिया जाता है फिर वह उससे आगे अथवा पीछे नहीं होते ।

(७) यदि तू सच्चा ही है तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नही लाता ?[1]

لَوْمَا تَأْتِينَا بِالْمَلَٰٓئِكَةِ إِن كُنتَ مِنَ الصَّٰدِقِينَ ۞

(८) हम फ़रिश्तों को सत्य के साथ ही उतारते हैं तथा उस समय वे अवसर दिये गये नहीं होते ।[2]

مَا نُنَزِّلُ الْمَلَٰٓئِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوٓا إِذًا مُّنظَرِينَ ۞

(९) निःसंदेह हमने ही इस क़ुरआन को उतारा है तथा हम ही इसके रक्षक हैं ।[3]

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَٰفِظُونَ ۞

---

[1]यह काफ़िरों के कुफ़्र तथा वैर का वर्णन है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दीवाना कहते तथा कहते कि यदि तू (हे मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सच्चा है तो अपने अल्लाह से कह कि वह फ़रिश्ते हमारे पास भेजे ताकि वे तेरी रिसालत की पुष्टि करें अथवा हमें नष्ट कर दें ।

[2]अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि फ़रिश्ते हम सत्य के साथ ही भेजते हैं अर्थात जब हमारी नीति तथा इच्छा यातना भेजने की होती है, तो फिर फ़रिश्ते धरती पर उतरते हैं । तथा फिर वे अवसर नहीं दिये जाते तुरन्त नाश कर दिये जाते हैं ।

[3]अर्थात उसको युग के हस्तक्षेप से तथा परिवर्तन एवं बदलने से सुरक्षित रखना हमारा काम है । अतः क़ुरआन आज तक उसी प्रकार सुरक्षित है, जिस प्रकार अवतरित हुआ था, भटके हुए गुट अपने-अपने विचारों के आधार पर इसके अर्थ में तो परिवर्तन करते रहे हैं तथा आज भी करते हैं, परन्तु पूर्व की आकाशीय पुस्तकों की भाँति शाब्दिक परिवर्तन अथवा कमी एवं अधिकता से सुरक्षित है । इसके अतिरिक्त प्रत्येक समय में सत्यवादियों के एक गुट ने इस अर्थ परिवर्तन का विरोध किया है, तथा उन अर्थ में परिवर्तन करने वालों के मुख से पर्दा हटाकर असली मुख समाज के समक्ष प्रस्तुत करता रहा है तथा आज भी वह इस मैंदान में सक्रिय है । इसके अतिरिक्त क़ुरआन के लिये ذِكْر(शिक्षा) का शब्द प्रयोग किया गया है, जिससे ज्ञात होता है कि क़ुरआन संसार वालों के लिए ذِكْر (सर्तक करने तथा शिक्षाप्रद होने) के पक्ष को, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन चरित्र के प्रकाशमयी चित्रों तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथनों को भी सुरक्षित करके, क़ियामत तक के लिए शेष रखा गया है । अतः क़ुरआन करीम तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन चरित्र के द्वारा लोगों को इस्लाम का आमंत्रण देने का मार्ग सदैव के लिए खुला हुआ है । यह सम्मान तथा सुरक्षा का स्थान पूर्व की आकाशीय पुस्तकों तथा रसूलों को प्राप्त नहीं हुआ ।

(१०) तथा हमने आप से पूर्व के समुदायों में भी अपने रसूल (निरन्तर) भेजे।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ فِي شِيَعِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٠﴾

(११) तथा (लेकिन) जो भी रसूल (संदेशवाहक) आता, उस का वे उपहास उड़ाते।[1]

وَمَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١١﴾

(१२) पापियों के दिलों में हम इसी प्रकार यही रचा दिया करते हैं।[2]

كَذَٰلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٢﴾

(१३) वे इस पर ईमान नहीं लाते तथा नि:संदेह विगत लोगों का आचरण (व्यतीत) हुआ है।[3]

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾

(१४) तथा यदि हम उन पर आकाश का द्वार खोल भी दें तथा ये वहाँ चढ़ने लग जायें।

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ﴿١٤﴾

(१५) जब भी वे यही कहेंगे कि हमें दृष्टिबंध कर दिया गया है, बल्कि हम लोगों पर जादू करदिया गया है।[4]

لَقَالُوا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ﴿١٥﴾

---

[1]यह जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि केवल आप ही को झुठलाया नहीं गया, प्रत्येक रसूल के साथ उसके समुदाय ने यही व्यवहार किया है।

[2]अर्थात यह कुफ़्र तथा रसूलों का उपहास हम अपराधियों के दिलों में डाल देते हैं अथवा बसा देते हैं, यह सम्बन्ध अल्लाह तआला ने अपनी ओर इसलिए किया कि प्रत्येक वस्तु का स्रष्टा अल्लाह तआला ही है। यद्यपि उनका यह कर्म उनके निरन्तर व्यवहार के परिणाम स्वरूप अल्लाह की इच्छा से उत्पन्न हुआ हो।

[3]अर्थात उनके नष्ट करने का वही साधन है, जो अल्लाह ने पूर्व से ही निर्धारित कर रखा है कि झुठलाने तथा उपहास उड़ाने के पश्चात समुदायों को नष्ट करता रहा है।

[4]अर्थात उनका कुफ़्र तथा वैर उस सीमा तक बढ़ा हुआ है कि फ़रिश्तों का अवतरित होना तो एक ओर, यदि स्वयं उनके लिए आकाश के द्वार खोल दिये जायें तथा ये उन द्वारों से आकाश पर आयें-जायें तब भी उनको अपनी आँखों पर विश्वास नहीं आयेगा तथा रसूलों को नहीं मानेंगे, बल्कि यह कहेंगे कि हमारी नज़रबन्दी कर दी गयी है अथवा हम पर

(१६) तथा नि:संदेह हमने आकाश में ग्रहों बनाये हैं,[1] तथा देखने वालों के लिए इसे शोभामान किया है।

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ﴿١٦﴾

(१७) तथा उसे प्रत्येक धिक्कारे शैतान से सुरक्षित रखा है।[2]

وَحَفِظْنَاهَا مِن كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ﴿١٧﴾

(१८) हाँ, जो चोरी छुपे सुनने का प्रयत्न करे

إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَأَتْبَعَهُ

जादू कर दिया गया है, जिसके कारण हम ऐसा आभास कर रहे हैं कि हम आकाश पर आ जा रहे हैं। जबकि ऐसा नहीं है।

[1] بـروج बहुवचन है برج का, जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अथवा प्रकाशित होने के हैं। इसी से تـبرج है जो स्त्री के श्रृंगार प्रदर्शन के अर्थ में प्रयोग होता है। यहाँ आकाश के तारों-ग्रहों को بروج कहा गया है क्योंकि वह भी उच्च तथा प्रत्यक्ष होते हैं। कुछ विद्वान यह कहते हैं कि بروج से तात्पर्य सूर्य तथा चन्द्रमा तथा अन्य ग्रहों की वे कलायें हैं, जो उनके लिए निर्धारित हैं तथा ये १२ हैं, कुम्भ, मेष, कर्क, मकर, मिथुन, सिंह, तुला, मंगल, शनि, वृश्चिक, वृष तथा कन्या। अरब के लोग इन ग्रहों की कलाओं तथा उनके द्वारा ऋतु की स्थिति ज्ञात करते थे। इसमें कोई आपत्ति नहीं। (लेकिन) उनके द्वारा अनहोनी, होने वाली घटनाओं के ज्ञान का दावा करना, जैसेकि आजकल भी अशिक्षितों में इसका विशेष प्रचलन है। तथा लोगों के भाग्य को उनके द्वारा देखा तथा समझा जाता है, यद्यपि इनका सम्वन्ध संसार में होने वाली घटनाओं से नहीं होता, जो कुछ भी होता है, वह अल्लाह के आदेश से होता है। अल्लाह तआला ने उन ग्रहों का वर्णन अपने सामर्थ्य तथा अनुपम कारीगरी के रूप में किया है। इसके अतिरिक्त यह भी स्पष्ट किया है कि ये आकाश कि शोभा भी हैं।

[2] رجيم ، مرجوم के अर्थ में है पत्थर मारना। शैतान को रजीम इसलिए कहा गया है कि यह जब भी आकाश की ओर जाने का प्रयत्न करता है, तो आकाश से 'शहाव साक़िव' (उल्का) उस पर टूट कर गिर पड़ते हैं। फिर रजीम धिक्कारे तथा वुरे के अर्थ में भी प्रयोग होता है, क्योंकि जिसे पत्थरों से मारा जाता है, उसे प्रत्येक ओर से धिक्कारा तथा बुरा भी कहा जाता है। यहाँ अल्लाह तआला ने यही फ़रमाया है कि हमने आकाशों की सुरक्षा की है प्रत्येक शैतान रजीम से, अर्थात इन सितारों के द्वारा क्योंकि ये शैतान को मारते हैं तथा उसे भागने पर विवश कर देते हैं।

شِهَابٌ مُّبِينٌ ﴿١٨﴾ उसके पीछे प्रज्वलित (खुला) शोला लगता है ।[1]

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُونٍ ﴿١٩﴾

(१९). तथा धरती को हमने फैला दिया है तथा उस पर पर्वत डाल रखे हैं । तथा उसमें हम ने प्रत्येक चीज़ निश्चित मात्रा में उगा दी है ।[2]

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهُ بِرَازِقِينَ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा उसी में हमने तुम्हारी जीविकायें बना दी हैं,[3] तथा जिन्हें तुम जीविका देने वाले नहीं हो ।[4]

وَإِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا

(२१) तथा जितनी भी वस्तुयें हैं, सबका कोष

---

[1]इसका अर्थ यह है कि शैतान आकाशों पर बातें सुनने के लिए जाते हैं, जिन पर 'शहाब साक़िब' (उल्का) टूट कर गिरते हैं, जिनसे कुछ तो जल जाते हैं तथा कुछ बच जाते हैं तथा कुछ सुन आते हैं । हदीस में इसकी व्याख्या इस प्रकार आयी है । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं : "जब अल्लाह तआला आकाश पर कोई निर्णय करता है, तो फ़रिश्ते उसे सुनकर अपने पंख अथवा बाँह फड़फड़ाते हैं (भक्ति तथा विवशता को प्रदर्शित करने के लिए) जैसेकि वह किसी चट्टान पर जंजीर की आवाज़ (ध्वनि) है । फिर जब फ़रिश्तों के दिलों से अल्लाह का भय दूर होता है, तो वे एक-दूसरे से पूछते हैं, तुम्हारे प्रभु ने क्या कहा ? वे कहते हैं, उसने जो कहा सत्य कहा तथा वह उच्च एवं महान है । (उसके पश्चात अल्लाह का वह निर्णय ऊपर से नीचे तक एक के पश्चात दूसरे को सुनाया जाता है) इस अवसर पर शैतान चोरी-छिपे बातें सुन लेते हैं । तथा यह चोरी-छिपे सुनने वाले शैतान थोड़ी-थोड़ी दूरी पर एक-दूसरे के ऊपर होते हैं तथा वह एक आध बात सुनकर अपने मित्र ज्योतिषी तथा तान्त्रिकों के कान में फूँक देते हैं, वह उसके साथ सौ झूठ मिला कर लोगों से बताते हैं । (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: अल-हिज्र)

[2] موزونٌ का अर्थ ज्ञात अथवा अनुमान से अर्थात आवश्यकतानुसार ।

[3] معايش बहुवचन है معيشة का । अर्थात धरती में तुम्हारे जीवन निर्वाह तथा जीविका के लिए अनगिनत वस्तुयें तथा साधन पैदा कर दिये ।

[4]इससे तात्पर्य नौकर-चाकर, दास तथा पशु हैं । अर्थात पशुओं को तुम्हारे अधीन कर दिया जिन पर तुम यात्रा करते हो, सामान भी लाद कर ले जाते हो तथा उनका बध करके खा भी जाते हो । दास-दासियाँ हैं जिनसे तुम सेवा का कार्य लेते हो । ये यद्यपि तुम्हारे अधीन हैं । तथा उनके खाने का प्रबन्ध भी तुम करते हो, परन्तु वास्तव में उनकी जीविका पैदा करने वाला अल्लाह तआला है, तुम नहीं हो । तुम यह न समझना की तुम उनकी जीविका देने वाले हो, यदि तुम उनको भोजन न दोगे तो वह भूख से मर जायेंगे ।

خَزَآئِنُهٗ ۫ وَمَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢١﴾

हमारे पास है,[1] तथा हम प्रत्येक चीज को उसके निर्धारित मात्रा में उतारते हैं।

وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ۚ وَمَآ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा हम बोझल हवायें[2] भेजते हैं, फिर आकाश से वर्षा करके तुम्हें पिलाते हैं, और तुम उसका भण्डार करने वाले नहीं हो।[3]

وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَ نُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा हम ही जिलाते तथा मारते हैं तथा (अन्ततः) हम ही उत्तराधिकारी हैं।

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा तुममें से आगे बढ़ने वाले तथा पीछे हटने वाले भी हमारे ज्ञान में हैं।

وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۭ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा आपका प्रभु सब लोगों को एकत्रित करेगा, नि:संदेह वह बड़ा विज्ञानी बड़े ज्ञान वाला है।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा वस्तुतः हमने मनुष्य को खनखनाती (सूखी) मिट्टी से, जो कि सड़े हुए गारे की थी,

---

[1]कुछ विद्वानों ने خزائن से तात्पर्य वर्षा लिया है क्योंकि वर्षा ही पैदावार का साधन है, परन्तु अधिक उचित बात यह है कि इससे तात्पर्य सभी सम्भावित कोष हैं, जिन्हें अल्लाह तआला अपनी इच्छानुसार तथा योजना के आधार पर नास्तित्व से स्तित्व में लाता रहता है।

[2]वायु को बोझल इसलिए कहा गया है कि यह उन बादलों को उठाती हैं जिनमें पानी होता है। जिस प्रकार لقحة गर्भवती ऊँटनी को कहा जाता है, जो गर्भ में बच्चा उठाये होती है।

[3]अर्थात यह पानी जो हम उतारते हैं, उसे तुम एकत्रित करके रखने का सामर्थ्य नहीं रखते। यह हमारी शक्ति तथा कृपा है कि हम उस पानी को स्रोतों, कुओं तथा नदियों के द्वारा सुरक्षित रखते हैं। वरन हम चाहें तो पानी का तल इतना नीचा कर दें कि स्रोतों तथा कुँओं से पानी लेना तुम्हारे लिए असम्भव हो जाये। जिस प्रकार कई बार अल्लाह तआला कुछ स्थानों पर अपनी शक्ति का नमूना प्रदर्शित करता है।

पैदा किया है ।[1]

(२७) तथा उससे पूर्व जिन्नात को हमने लौ (ज्वाला) वाली अग्नि[2] से पैदा किया ।	وَالْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾
(२८) तथा जब तेरे प्रभु ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं एक मनुष्य को काली सड़ी हुई खनखनाती मिट्टी से पैदा करने वाला हूँ ।	وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٨﴾
(२९) तो जब मैं उसे पूरा बना चुकूँ तथा उसमें अपनी आत्मा फूँक दूँ तो तुम सब उसके लिए मस्तक झुका देना ।[3]	فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٢٩﴾
(३०) अतः सभी फ़रिश्तों ने सबके सब ने माथा टेक दिया ।	فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٣٠﴾

---

[1]मिट्टी की विभिन्न अवस्थाओं के विभिन्न नाम हैं । सूखी मिट्टी تراب भीगी हुई, طين गूँधी हुई दुर्गन्धित, حمإ مسنون यह ﴿حَمَإٍ مَّسْنُوْنٍ﴾ सूखकर खनखन बोलने लगे तो صلصال तथा जब उसे अग्नि में पका लिया जाये तो فخار (ठीकरी) कहलाती है । यहाँ अल्लाह तआला ने मनुष्य की उत्पत्ति का जिस प्रकार वर्णन किया है इससे ज्ञात होता है कि आदम मिट्टी का पुतला حمإ مسنون (गूँधी हुई सड़ी हुई बदबूदार) मिट्टी से बनाया गया, जब वह सूखकर खनखन करने लगा (अर्थात صلصال) हो गया तो उसमें आत्मा फूँकी गयी, इसी صلصال को क़ुरआन में अन्य स्थान पर كالفخار (فخار के समान) कहा गया है ।

﴿خَلَقَ الْإِنسَانَ مِن صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ﴾ [الرحمن: ١٤]

"पैदा किया मनुष्य को खनखनाती मिट्टी से जैसे ठीकरा ।" (सूरः *अर्रहमान*-१४)

[2] جنّ को جن इसलिए कहा जाता है कि वह आँखों से दिखाई नहीं देते । *सूरः रहमान* में जिन्नात की उत्पत्ति مارج مّن نار से बताई गयी है तथा सहीह मुस्लिम की एक हदीस में यही कहा गया है "خُلقت الملائكة من نور و خلق الجانّ من نار و خلق آدم مما و صـف لكـم" (किताबुज़ जोहद बाब फी अहादीसि मुतफ़र्रेक़ः) इस आधार पर लौ वाली अग्नि अथवा अग्नि के शोले का एक ही अर्थ होगा ।

[3]दण्डवत (सजदा) का यह आदेश सम्मान स्वरूप था, इबादत के रूप में नहीं तथा चूँकि यह अल्लाह का आदेश था इसलिए इसके मान्य होने में कोई संदेह नहीं । परन्तु अब इस्लामी धार्मिक नियम में किसी को सम्मान स्वरूप भी दण्डवत करना उचित नहीं ।

إِلَّآ إِبۡلِيسَ أَبَىٰٓ أَن يَكُونَ مَعَ ٱلسَّٰجِدِينَ ﴿٣١﴾

(३१) परन्तु इवलीस, कि उसने सजदा करने वालों में सम्मिलित होने से इंकार कर दिया।

قَالَ يَٰٓإِبۡلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ ٱلسَّٰجِدِينَ ﴿٣٢﴾

(३२) (अल्लाह तआला ने) कहा, हे इवलीस! तुझे क्या हुआ कि तू सजदा करने वालों में सम्मिलित न हुआ?

قَالَ لَمۡ أَكُن لِّأَسۡجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقۡتَهُۥ مِن صَلۡصَٰلٍ مِّنۡ حَمَإٍ مَّسۡنُونٍ ﴿٣٣﴾

(३३) वह वोला कि मैं ऐसा नहीं कि इस मनुष्य को सजदा करूँ जिसे तूने काली तथा सड़ी हुई खनखनाती मिट्टी से पैदा किया है।[1]

قَالَ فَٱخۡرُجۡ مِنۡهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٤﴾

(३४) कहा कि अव तू स्वर्ग से निकल जा क्योंकि तू धिक्कारा हुआ है।

وَإِنَّ عَلَيۡكَ ٱللَّعۡنَةَ إِلَىٰ يَوۡمِ ٱلدِّينِ ﴿٣٥﴾

(३५) तथा तुझ पर मेरी धिक्कार है क़ियामत के दिन तक।

قَالَ رَبِّ فَأَنظِرۡنِيٓ إِلَىٰ يَوۡمِ يُبۡعَثُونَ ﴿٣٦﴾

(३६) कहने लगा हे मेरे प्रभु! मुझे उस दिन तक अवसर प्रदान कर कि लोग पुन: उठा खड़े किये जायें।

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ ٱلۡمُنظَرِينَ ﴿٣٧﴾

(३७) कहा कि (ठीक है) तू उनमें से है, जिन्हें अवसर दिया गया है।

إِلَىٰ يَوۡمِ ٱلۡوَقۡتِ ٱلۡمَعۡلُومِ ﴿٣٨﴾

(३८) निर्धारित दिन के समय तक का।

قَالَ رَبِّ بِمَآ أَغۡوَيۡتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ

(३९) (शैतान ने) कहा कि हे मेरे प्रभु! तूने मुझे भटकाया है, मुझे भी सौगन्ध है कि मैं भी

---

[1]शैतान ने अस्वीकार करने का कारण आदरणीय आदम का मिट्टी तथा मनुष्य होना बताया। जिसका अर्थ यह हुआ कि मनुष्य को उसके मनुष्य होने के कारण हीन समझना यह शैतान का (दर्शन) विचार है, जो सत्यवादियों का विश्‍वास नहीं हो सकता। इसलिए सत्यवादी नवियों के मनुष्य होने को अस्वीकार नहीं करते, इसलिए कि उनके मनुष्य होने को क़ुरआन करीम ने स्वयं अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में वर्णित किया है, इसके अतिरिक्त उनके मनुष्य होने से उनके मान तथा सम्मान में कोई अंतर नहीं पड़ता।

धरती में उनके लिए मोह उत्पन्न करूँगा तथा उन सबको भटकाऊँगा ।	لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾
(४०) अतिरिक्त तेरे उन भक्तों के जो चयन कर लिये गये हैं ।	إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾
(४१) कहा कि हाँ यही मुझ तक पहुँचने का सीधा मार्ग है ।[1]	قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾
(४२) मेरे भक्तों पर तेरा कोई प्रभाव नहीं,[2] परन्तु हाँ जो भटके हुए लोग तेरा अनुकरण करें ।	إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾
(४३) तथा निःसंदेह उन सबके वचन का स्थान नरक है ।[3]	وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾
(४४) जिसके सात द्वार हैं । प्रत्येक द्वार के लिए उनका एक भाग बँटा हुआ है ।[4]	لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَقْسُومٌ ﴿٤٤﴾

---

[1]अर्थात तुम सबको अन्ततः मेरे पास ही लौट कर आना है, जिसने मेरा तथा मेरे रसूलों का अनुसरण किया होगा, उसे अच्छा बदला दूँगा तथा जो शैतान का अनुकरण करता रहा होगा उसे कड़ा दण्ड दूँगा, जो नरक के रूप में तैयार है ।

[2]अर्थात मेरे सदाचारी भक्तों पर तेरा कोई दाँव नहीं चलेगा । इसका यह अर्थ नहीं कि उनसे कोई पाप नहीं होगा, अपितु इसका अर्थ यह है कि उनसे ऐसा पाप न होगा जिसके पश्चात वे लज्जित तथा क्षमा न माँगें क्योंकि वही पाप मनुष्यों के विनाश का कारण है कि जिसके पश्चात मनुष्य में लज्जा तथा अल्लाह से क्षमा माँगने की भावना जागृत न हो । ऐसे पाप के पश्चात ही मनुष्य पाप पर पाप किये चला जाता है, तथा अन्त में स्थाई विनाश तथा बर्बादी उसका दुर्भाग्य बन जाता है । तथा ईमानवालों का गुण यह है कि पाप की पुनरावृत्ति नहीं करते, अपितु तुरन्त क्षमा माँगकर भविष्य में उससे बचने का प्रयत्न करते हैं ।

[3]अर्थात जितने भी तेरे अनुयायी होंगे सब नरक के ईंधन बनेंगे ।

[4]अर्थात प्रत्येक द्वार विशेष प्रकार के लोगों के लिए निर्धारित होंगे । जैसे एक द्वार मूर्तिपूजकों के लिए, एक नास्तिकों के लिए, एक काफ़िरों के लिए, एक व्यभिचारियों, ब्याज खाने वालों, चोरों तथा डाकूओं के लिए आदि । अथवा सात द्वारों से तात्पर्य सात तह

(४५) नि:संदेह परहेज़गार लोग बागों तथा स्रोतों में होंगे ।[1]

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾

(४६) (उनसे कहा जायेगा) सुरक्षा एवं शान्ति के साथ उसमें प्रवेश कर जाओ ।[2]

ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِنِينَ ﴿٤٦﴾

(४७) तथा उनके दिलों में जो कुछ भी आक्रोश तथा कटुता थी हम सब कुछ निकाल देंगे ।[3] वे भाई-भाई बने हुए एक-दूसरे के सम्मुख सिंहासन पर बैठे होंगे ।

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾

(४८) न तो वहाँ उन्हें कोई दुख स्पर्श कर सकता है तथा न वह वहाँ से कभी निकाले जायेंगे ।

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُم مِّنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾

तथा कक्ष हैं । पहला तह अथवा कक्ष नरक है, दूसरा अग्नि, फिर तीव्र अग्नि, फिर भभकती आग, फिर नरक की आग का निचला भाग, फिर तन्दूर की तरह भून देने वाली आग, फिर पाताल की आग । सबसे ऊपर वाले भाग में वे एकेश्वरवादी लोग होंगे जिनसे छोटे-छोटे पाप हुए होंगे तथा जिन्हें कुछ समय दण्ड देने के उपरान्त निकाल दिया जायेगा अथवा सिफ़ारिश पर निकाल दिया जायेगा । दूसरे में यहूदी, तीसरे में इसाई, चौथे में नास्तिक, पाँचवें में अंधविश्वासी (अग्निपूजक), छठें में मूर्तिपूजक तथा सातवें में पाखण्डी होंगे । सबसे ऊपर वाले कक्ष का नाम नरक है, उसके पश्चात इसी क्रम से नाम हैं । (फ़तहुल क़दीर)

[1]नरक तथा नरकवासियों के पश्चात स्वर्ग तथा स्वर्ग में जाने वालों का वर्णन है ताकि स्वर्ग में जाने की रुचि हो, अल्लाह से डरने वालों से तात्पर्य मूर्तिपूजा से बचने वाले एकेश्वरवादी हैं तथा कुछ विद्वानों के निकट वह ईमानवाले हैं जो सभी बुराईयों से बचते हैं । جنات से तात्पर्य बाग़ तथा عيون से तात्पर्य नदियाँ हैं । ये बाग़ तथा नदियाँ सभी अल्लाह से डरने वालों के लिए संयुक्त रूप से होंगी अथवा प्रत्येक के लिए अलग-अलग बाग़ तथा नदियाँ होंगी अथवा एक-एक बाग़ तथा नदी होगी ।

[2]सुरक्षा प्रत्येक प्रकार की विपत्ति से तथा शान्ति प्रत्येक प्रकार के भय से । अथवा यह अर्थ है कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को अथवा फ़रिश्ते स्वर्ग वालों के लिए सुरक्षित रहने की दुआ देंगे अथवा अल्लाह की ओर से उनके लिए शान्ति तथा सुरक्षा की घोषणा होगी ।

[3]संसार में उनके मध्य जो भी ईर्ष्या, द्वेष तथा कटुता के भाव होंगे, वे उनके हृदय से निकाल दिये जायेंगे तथा एक-दूसरे के विषय में उनके दिल दर्पण की भाँति साफ होंगे ।

(४९) मेरे भक्तों को सूचित कर दो कि मैं बहुत क्षमा करने वाला तथा अत्यन्त कृपालु हूँ।

نَبِّئْ عِبَادِيٓ أَنِّيٓ أَنَا ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾

(५०) तथा साथ ही मेरी यातनायें भी अत्यन्त दुखदायी हैं।

وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ ٱلْعَذَابُ ٱلْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾

(५१) तथा उन्हें इब्राहीम के अतिथियों का (भी) हाल सुना दो।

وَنَبِّئْهُمْ عَن ضَيْفِ إِبْرَٰهِيمَ ﴿٥١﴾

(५२) कि जब उन्होंने उसके पास आकर सलाम किया, तो उसने कहा कि हमको तो तुमसे भय लगता है।[1]

إِذْ دَخَلُوا۟ عَلَيْهِ فَقَالُوا۟ سَلَٰمًا قَالَ إِنَّا مِنكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾

(५३) उन्होंने कहा भय न करो, हम तुझे एक सुबोध वाणी वाले पुत्र की शुभ सूचना देते हैं।

قَالُوا۟ لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَٰمٍ عَلِيمٍ ﴿٥٣﴾

(५४) कहा क्या इस बुढ़ापे के छू लेने के पश्चात तुम मुझे शुभ सूचना देते हो ! ये शुभ-सूचना तुम कैसे दे रहे हो ?

قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلَىٰٓ أَن مَّسَّنِيَ ٱلْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُونَ ﴿٥٤﴾

(५५) उन्होने कहा, हम आपको पूर्णतः सत्य, शुभ-सूचना सुनाते हैं। आप निराश लोगों में सम्मिलित न हों।

قَالُوا۟ بَشَّرْنَٰكَ بِٱلْحَقِّ فَلَا تَكُن مِّنَ ٱلْقَٰنِطِينَ ﴿٥٥﴾

---

[1]आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम को इन फ़रिश्तों से भय इसलिए हुआ कि उन्होंने आदरणीय इब्राहीम का तैयार किया भुना हुआ बछड़े का माँस नहीं खाया, जैसाकि सूरः हूद में वर्णन हो चुका है। इससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह तआला के महान सम्मानित पैग़म्बर को भी (गुप्त बातों) परोक्ष का ज्ञान नहीं होता, यदि उन्हें परोक्ष का ज्ञान होता तो आदरणीय इब्राहीम समझ जाते कि आने वाले मेहमान (अतिथि) फ़रिश्ते हैं तथा उनके लिए भोजन तैयार करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि फ़रिश्ते को मनुष्यों की भाँति खाने-पीने की आवश्यकता नहीं है।

(५६) कहा अपने प्रभु की कृपा से निराश तो केवल (भटके तथा) बहके हुए लोग ही होते हैं ।[1]

قَالَ وَمَن يَقْنَطُ مِن رَّحْمَةِ رَبِّهِۦٓ إِلَّا ٱلضَّآلُّونَ ﴿٥٦﴾

(५७) पूछा कि हे अल्लाह के भेजे हुए (फ़रिश्तो) ! तुम्हारा ऐसा क्या विशेष कार्य है ?[2]

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا ٱلْمُرْسَلُونَ ﴿٥٧﴾

(५८) उन्होंने उत्तर दिया कि हम पापी लोगों की ओर भेजे गये हैं ।

قَالُوٓا۟ إِنَّآ أُرْسِلْنَآ إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٥٨﴾

(५९) परन्तु लूत का परिवार कि हम उन सबको अवश्य बचा लेंगे ।

إِلَّآ ءَالَ لُوطٍ إِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٩﴾

(६०) सिवाय लूत की पत्नी के कि हमने उसे रुकने तथा शेष रह जाने वालों में निर्धारित कर दिया है ।

إِلَّا ٱمْرَأَتَهُۥ قَدَّرْنَآ ۙ إِنَّهَا لَمِنَ ٱلْغَٰبِرِينَ ﴿٦٠﴾

(६१) जब भेजे हुए फ़रिश्ते लूत परिवार के पास पहुँचे ।

فَلَمَّا جَآءَ ءَالَ لُوطٍ ٱلْمُرْسَلُونَ ﴿٦١﴾

(६२) तो लूत ने कहा तुम लोग तो कुछ अपरिचित से प्रतीत होते हो ।[3]

قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنكَرُونَ ﴿٦٢﴾

---

[1]अर्थात संतान पैदा होने के समाचार पर मैं आश्चर्य तथा असम्भव होने का प्रदर्शन कर रहा हूँ तो केवल अपने बुढ़ापे के कारण कर रहा हूँ । यह बात नहीं कि मैं अपने प्रभु की कृपा से निराश हूँ । प्रभु की कृपा से निराश तो केवल भटके हुए लोग होते हैं ।

[2]आदरणीय इब्राहीम ने इन फ़रिश्तों की बातचीत से यह अनुमान लगाया कि यह केवल संतान की शुभसूचना देने ही नहीं आये हैं, बल्कि उनके आगमन का मूल कारण कुछ और है । अतः उन्होंने पूछा ।

[3]यह फ़रिश्ते सुन्दर तथा नवयुवकों के रूप में आये थे तथा आदरणीय लूत के लिए बिल्कुल अन्जान थे, इसलिए उन्होंने उनसे अनभिज्ञता तथा अपरिचितता का प्रदर्शन किया ।

(६३) उन्होंने कहा (नहीं) अपितु हम तेरे पास वह चीज़ लाये हैं, जिसमें ये लोग संदेह कर रहे थे ।[1]

قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٦٣﴾

(६४) तथा हम तो तेरे पास (स्पष्ट) सत्य लेकर आये हैं तथा हम हैं भी पूर्ण सत्यवादी ।[2]

وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٦٤﴾

(६५) अब तू अपने परिवार सहित इस रात के किसी भाग में चल दे, तू स्वयं उनके पीछे रहना,[3] (तथा सावधान) ! तुम में से कोई भी मुड़कर न देखे तथा जहाँ का आदेश तुम्हें किया जा रहा है, वहाँ चले जाना ।

فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٥﴾

(६६) तथा हमने उसकी ओर इस बात का निर्णय कर दिया कि प्रातः होते-होते उन सबकी जड़ें काट दी जायेंगी ।[4]

وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿٦٦﴾

(६७) तथा शहरी लोग ख़ुशियाँ मनाते हुए आये ।[5]

وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٦٧﴾

---

[1] अर्थात अल्लाह का प्रकोप जिसमें तेरे समुदाय को संदेह है कि वह आ भी सकता है ।

[2] इस स्पष्ट सत्य से भी तात्पर्य प्रकोप है, जिसके लिए वे भेजे गये थे, इसलिए उन्होंने यह कहा कि हम हैं भी अत्यन्त सच्चे । अर्थात प्रकोप की जो बात हम कह रहे हैं इसमें सच्चे हैं । अब इस समुदाय के विनाश का समय अत्यन्त निकट आ पहुँचा है ।

[3] ताकि कोई ईमानवाला पीछे न रहे, तू उनको आगे करता रहे ।

[4] अर्थात लूत को प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा इस निर्णय से सूचित कर दिया गया कि प्रातः होने से पूर्व इन लोगों की जड़ें काट दी जायेंगी अथवा دابر से तात्पर्य वह अन्तिम मनुष्य है जो शेष रह जायेगा, फरमाया : वह भी प्रातः होने तक नष्ट कर दिया जायेगा ।

[5] इधर तो आदरणीय लूत के घर में समुदाय के विनाश का निर्णय हो रहा था । उधर लूत के समुदाय वालों को पता चला कि लूत के घर में सुन्दर नवयुवक अतिथि आये हैं, तो अपनी समलैंगिक दुराचार के कारण बड़े प्रसन्न हुए तथा प्रसन्न होकर आदरणीय लूत के घर आये तथा उनसे माँग की कि उन नवयुवकों को उनके हवाले कर दिया जाये ताकि वे उनके साथ दुराचार करके अपनी कामवासना शान्त कर सकें ।

قَالَ إِنَّ هَٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِى فَلَا تَفْضَحُونِ ﴿٦٨﴾

(६८) (लूत ने) कहा ये लोग मेरे अतिथि हैं तुम मुझे अपमानित न करो ।[1]

وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ ﴿٦٩﴾

(६९) तथा अल्लाह (तआला) से डरो एवं मुझे अपमानित न करो ।

قَالُوٓا۟ أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٧٠﴾

(७०) वे बोले कि क्या हमने तुम्हें संसार भर (की ठीकेदारी) लेने से मना नहीं कर रखा ?[2]

قَالَ هَٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِىٓ إِن كُنتُمْ فَٰعِلِينَ ﴿٧١﴾

(७१) (लूत ने) कहा यदि तुम्हें करना ही है, तो ये मेरी पुत्रियाँ उपस्थित हैं ।[3]

لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِى سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿٧٢﴾

(७२) तेरी आयु की सौगन्ध ! वे तो अपने नशे में फिर रहे थे ।[4]

---

[1]आदरणीय लूत ने उन्हें समझाने का प्रयत्न किया कि वे अतिथि हैं उन्हें मैं किस प्रकार तुम्हारे हवाले कर सकता हूँ, इसमें तो मेरा अपमान है ।

[2]उन्होंने दुराग्रह तथा दुर्व्यवहार का प्रदर्शन करते हुए कहा कि हे लूत ! तू इन अजनवी मेहमानों का क्या लगता है ? तथा उनका पक्ष क्यों लेता है ? क्या हमने तुझे मना नहीं किया कि अजनवियों का पक्ष न लिया कर, अथवा उनको अपना अतिथि न वनाया कर ? यह सारी वातचीत उस समय हुई जव कि आदरणीय लूत को यह ज्ञात नहीं था कि ये अजनवी अतिथि अल्लाह के भेजे हुए फ़रिश्ते हैं तथा वे इसी दुच्चरित्र समुदाय को ध्वस्त करने के लिए आये हैं, जो इन फ़रिश्तों के साथ दुराचार करने के लिए दृढ़ थे, जैसाकि सूर: हूद में वर्णन आ चुका है । यहाँ उनके फ़रिश्ते होने का वर्णन पहले आ गया है ।

[3]अर्थात तुम उनसे विवाह कर लो अथवा अपने समुदाय की स्त्रियों को पुत्रियाँ कहा, अर्थात तुम स्त्रियों के साथ विवाह करो अथवा जो विवाहित हैं उन्हें कामवासना की तृप्ति अपनी पत्नियों से करनी चाहिए ।

[4]अल्लाह तआला नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्वोधित कर, उनके जीवन की सौगन्ध खा रहा है, जिससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गरिमा तथा सम्मान का स्पष्टीकरण हो रहा है, परन्तु अन्य किसी के लिए अल्लाह के अतिरिक्त अन्य किसी की सौगन्ध खाना उचित नहीं है । अल्लाह तआला तो पूर्ण स्वामी है, वह जिसकी चाहे सौगन्ध खाये, उससे कौन पूछने वाला है ? अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जिस प्रकार शराव के नशे में धुत्त मनुष्य की वुद्धि विकृत हो जाती है, उसी प्रकार यह अपनी वुराई

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ۝

(७३) फिर सूर्योदय होते-होते उन्हें एक कड़ी आवाज़ ने पकड़ लिया ।[1]

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ ۝

(७४) अन्ततः हमने उस (नगर) को ऊपर नीचे कर दिया[2] तथा उन लोगों पर कंकड़ वाले पत्थर[3] बरसाये ।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِينَ ۝

(७५) नि:संदेह हर एक शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए[4] इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं ।

وَإِنَّهَا لَبِسَبِيلٍ مُّقِيمٍ ۝

(७६) और यह बस्ती ऐसे मार्ग पर है, जिस पर निरन्तर यातायात होती रहती है ।[5]

तथा भटकावे में इतने मस्त थे कि आदरणीय लूत की इतनी उचित बात भी उनकी समझ में नहीं आ पायी ।

[1]एक चिंघाड़ ने जबकि सूर्योदय हो चुका था, उनका अन्त कर दिया । कुछ विद्वान कहते हैं कि यह तीव्र आवाज़ आदरणीय जिब्रील की थी ।

[2]कहा जाता है कि उनकी बस्तियों को धरती से उठाकर ऊपर आकाश पर ले जाया गया तथा वहाँ से उनको उल्टा करके धरती पर फेंक दिया गया । इस प्रकार ऊपर का भाग नीचे तथा नीचे का भाग ऊपर कर दिया गया, तथा कहा जाता है कि इससे तात्पर्य मात्र उस बस्ती की छतों सहित धरती में धंसा देना है ।

[3]इसके पश्चात खिंगर के रूप में विशेष प्रकार के पत्थर बरसाये गये । इस प्रकार उन्हें तीन प्रकार के प्रकोपों से पीड़ित कर शिक्षाप्रद-चिन्ह के रूप में बना दिया गया ।

[4]गूढ़ दृष्टि से परीक्षण करने तथा सोच-विचार करने वालों को متوسمین कहा गया है । मोतवस्सेमीन के लिए उस घटना में शिक्षा के पहलू तथा लक्षण हैं ।

[5]तात्पर्य मुख्य मार्ग है । अर्थात लूत के समुदाय की बस्तियाँ मदीने से सीरिया जाते समय मार्ग में पड़ती हैं । प्रत्येक यात्री को उन्हीं मार्ग से होकर गुज़रना पड़ता है । कहते हैं ये पाँच बस्तियाँ थीं-सदूम, (यह केन्द्रीय बस्ती थी) साअबः, सावः, असरः तथा दूमा । कहा जाता है कि आदरणीय जिब्रील ने उन्हें बाँह पर उठाया तथा आकाश पर चढ़ गये, यहाँ तक कि आकाश वालों ने उनके कुत्तों के भोंकने तथा मुर्गों के बोलने की आवाज़ें सुनीं तथा फिर उन्हें धरती पर दे मारा । (इब्ने कसीर) परन्तु इस बात का कोई प्रमाण नहीं है ।

(७७) तथा इसमें ईमानवालों के लिए बड़ी निशानी है।	إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾
(७८) तथा ऐक: बस्ती के रहने वाले भी बड़े अत्याचारी थे।[1]	وَإِن كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ ﴿٧٨﴾
(७९) जिनसे अन्त में हमने बदला ले ही लिया। ये दोनों नगर खुले (सामान्य) मार्ग पर हैं।[2]	فَانتَقَمْنَا مِنْهُمْ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿٧٩﴾
(८०) तथा हिज्र वालों ने भी रसूलों को झुठलाया।[3]	وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٨٠﴾
(८१) तथा उन्हें हमने अपनी निशानियाँ प्रदान की थीं, परन्तु फिर भी वे उनसे गर्दन मोड़ने	وَآتَيْنَاهُمْ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٨١﴾

[1] أيكة घने वृक्ष को कहते हैं। इस बस्ती में घने वृक्ष होंगे। इसलिए उन्हें أصحاب الأيكة (वन अथवा जंगल वाले) कहा गया है। तात्पर्य उससे शुऐब का समुदाय है तथा उनका काल आदरणीय लूत के पश्चात का है तथा उनका क्षेत्र मदीना तथा सीरिया के मध्य लूत के समुदाय की बस्तियों के निकट था। इसे मदयन कहा जाता है, जो आदरणीय इब्राहीम के पुत्र अथवा पौत्र का नाम था तथा उन्हीं के नाम पर बस्ती का नाम पड़ गया था। उनका अत्याचार यह था कि अल्लाह के साथ साझीदार बनाते थे, लूट उनका कर्म था, तथा कम तौलना तथा नापना उनका व्यवहार था। उन पर जब प्रकोप आया तो एक बादल की घटा ने छा लिया फिर कड़क तथा भूकम्प ने उन्हें ध्वस्त कर दिया।

[2] إمام مبين का अर्थ भी मुख्य मार्ग है, जहाँ से रात-दिन गुज़रते हैं। दोनों नगरों से तात्पर्य लूत के समुदाय की बस्ती तथा शुऐब के समुदाय का निवास स्थान मदयन तात्पर्य है। ये दोनों एक-दूसरे के निकट ही थे।

[3] حجر आदरणीय स्वालेह के समुदाय समूद की बस्तियों का नाम था। उन्हें أصحاب الحجر कहा गया है। यह बस्ती मदीना तथा तबूक के मध्य थी। उन्होंने अपने पैग़म्बर आदरणीय स्वालेह को झुठलाया, परन्तु यहाँ अल्लाह तआला ने फ़रमाया : "उन्होंने पैग़म्बरों को झुठलाया।" यह इसलिए है कि एक पैग़म्बर का झुठलाना वैसे ही है जैसे सारे पैग़म्बरों को झुठलाया।

वाले ही रहे ।[1]

(८२) तथा ये लोग अपने घर पर्वतों से काट-काट कर बना लिया करते थे बिना भय के ।[2]

وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿٨٢﴾

(८३) अन्त में उन्हें भी प्रातः होते-होते कड़ी चीख़ (ध्वनि) ने आ दबोचा ।[3]

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ﴿٨٣﴾

(८४) अतः उनके किसी उपाय तथा कर्म ने उन्हें कोई लाभ न दिया ।

فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٤﴾

(८५) तथा हमने आकाशों तथा धरती को एवं उनके मध्य की सभी चीज़ों को सत्य के साथ ही रचा है ।[4] तथा क़ियामत अवश्य-अवश्य आने वाली है, बस तू सभ्यता तथा अच्छाई से सहन कर ले ।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ﴿٨٥﴾

---

[1]इन निशानियों में वह ऊँटनी भी थी, जो उनके कहने पर एक चट्टान से चमत्कार स्वरूप निकली थी, परन्तु अत्याचारियों ने उसे भी मार डाला ।

[2]अर्थात बिना किसी भय अथवा संकोच के पर्वतों को शिल्प विद्या द्वारा काट लिया करते थे । ९ हिजरी में तबूक जाते समय जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस बस्ती से गुज़रे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिर पर कपड़ा लपेट लिया था, अपनी सवारी की गति तेज़ कर दी तथा सहाबा से फ़रमाया कि रोते हुए तथा अल्लाह के प्रकोप से भयभीत होते हुए इस बस्ती से गुज़रो । (इब्ने कसीर) सहीह बुख़ारी तथा सहीह मुस्लिम में संख्या ४३३ तथा २२८५ में वर्णित है ।

[3]आदरणीय स्वालेह ने उनसे कहा कि तीन दिन पश्चात तुम पर प्रकोप आयेगा, अतः चौथे दिन उन पर प्रकोप आ गया ।

[4]सत्य से तात्पर्य वे लाभ तथा हित हैं जो आकाश तथा धरती की रचना का उद्देश्य है । अथवा सत्य से तात्पर्य सत्कर्मी को उसके सत्कर्म का बदला तथा कुकर्मियों को उनके कुकर्म का दण्ड देना है । जिस प्रकार एक अन्य स्थान पर फ़रमाया : अल्लाह ही के लिए है जो आकाशों में है तथा जो धरती में है ताकि वह बुरों को उनकी बुराईयों तथा सत्कर्मियों को उनके सत्कर्म का बदला दे । (सूरः *अल-नजम*-३१)

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلَّٰقُ الْعَلِيمُ ﴿٨٦﴾

(८६) निःसंदेह तेरा प्रभु ही पैदा करने वाला तथा जानने वाला है।

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ﴿٨٧﴾

(८७) तथा निःसंदेह हमने आपको सात आयतें दे रखी हैं[1] जो दुहराई जाती हैं। तथा महान क़ुरआन भी दे रखा है।

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾

(८८) आप कदापि अपनी आँखें इस बात की ओर न दौड़ायें[2] जिसे हमने उनमें से कई प्रकार के लोगों को प्रदान की है, न उन पर आप शोक करें तथा ईमानवालों के लिए अपनी बाँह झुकाये रहें।

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ﴿٨٩﴾

(८९) तथा कह दीजिए कि मैं स्पष्टरूप से डराने वाला हूँ।

---

[1] سبع مثاني से तात्पर्य क्या है ? इसमें व्याख्याकारों में मतभेद है। उचित बात तो यह है कि इससे तात्पर्य *सूरः फ़ातिहा* है। यह सात आयतें हैं तथा जो प्रत्येक नमाज़ की प्रत्येक रकअत में पढ़ी जाती हैं (मसानी का अर्थ पुनरावृत्ति के किये गये हैं) हदीस से भी इसकी पुष्टि होती है। अतः एक हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ﴾ यह "सबअ मसानी तथा क़ुरआन अज़ीम है जो मैं दिया गया हूँ।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः *अल-हिज्र*) एक अन्य हदीस में फ़रमाया «أُمُّ الْقُرْآنِ هِيَ السَّبْعُ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنُ الْعَظِيمُ». (उपरोक्त संदर्भ) सूरः *फ़ातिहा* क़ुरआन का एक भाग है इस लिए क़ुरआन अज़ीम का वर्णन भी साथ ही किया गया है।

[2]अर्थात हमने *सूरः फ़ातिहा* तथा क़ुरआन अज़ीम जैसे प्रदानों से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्मानित किया है, इसलिए दुनिया तथा उसकी शोभा एवं उन विभिन्न प्रकार के दुनिया वालों की ओर न देखें जिनको नश्वर दुनिया की अस्थाई वस्तुयें हमने दी हैं तथा वह जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठलाते हैं इस पर दुखी न हों तथा ईमानवालों के लिए अपनी बाँह झुकाये रखें। अर्थात उनके लिए नम्रता तथा प्रेम भाव अपनायें। इस लोकोक्ति की यर्थाता यह है कि जब पक्षी अपने बच्चों को अपनी प्रेमछाया में लेता है, तो उनको अपने बाँह अर्थात पंखों में ले लेता है। इस प्रकार यह शब्दों का योग (समस्त) नम्रता, प्रेम एवं प्यार का भाव अपनाने के भावार्थ में प्रयोग होता है।

(९०) जैसाकि हमने उन भाग खण्ड करने वालों पर उतारा ।[1]

كَمَآ أَنزَلْنَا عَلَى ٱلْمُقْتَسِمِينَ ﴿٩٠﴾

(९१) जिन्होंने इस क़ुरआन के टुकड़े-टुकड़े कर दिये ।

ٱلَّذِينَ جَعَلُوا۟ ٱلْقُرْءَانَ عِضِينَ ﴿٩١﴾

(९२) सौगन्ध है तेरे प्रभु की हम उन सबसे अवश्य पूछ करेंगे ।

فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٢﴾

(९३) हर उस चीज़ की जो वह करते थे ।

عَمَّا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

(९४) बस आप[2] इस आदेश को जो आपको किया जा रहा है खोलकर सुना दीजिए तथा मुशरिकों (मिश्रणवादियों) से मुँह फेर लीजिए ।

فَٱصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾

---

[1]कुछ व्याख्याकारों के निकट أنزلنا का कर्म कारक العذاب लुप्त है । अर्थ यह है कि मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से डराने वाला हूँ प्रकोप से । जैसे इस प्रकोप के जो مُقتسمين पर अवतरित हुआ । مقتسمين कौन हैं ? जिन्होंने अल्लाह की किताब को टुकड़े-टुकड़े कर दिया । कुछ विद्वान कहते हैं कि इससे कुरैश का समुदाय अभिप्राय है जिन्होंने अल्लाह की किताब को विभाजित कर दिया, इसके कुछ भाग को कविता, कुछ भाग को जादू, कुछ को अंधविश्वास तथा कुछ को पूर्वजों की कथायें बताया । कुछ विद्वान कहते हैं مقتسمين से अहले किताब तथा क़ुरआन से तात्पर्य तौरात तथा इंजील हैं । उन्होंने इन आकाशीय पुस्तकों को विभिन्न भागों में विभाजित कर दिया था । कुछ विद्वान कहते हैं कि यह आदरणीय स्वालेह का समुदाय है, जिन्होंने आपस में सौगन्ध खायी थी कि स्वालेह तथा उनके परिवार वालों की रात्रि के अंधेरे में हत्या कर डालेंगे ।

﴿ تَقَاسَمُوا۟ بِٱللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُۥ وَأَهْلَهُۥ ﴾ [النمل: ٤٩]

"उन्होंने अल्लाह की सौगन्ध खाई कि रात ही को हम स्वालेह तथा उसके परिवार वालों पर छापा मारेंगे ।" (*सूर: अन-नमल-४९*)

तथा आकाशीय पुस्तक को टुकड़े-टुकड़े कर डाला । عِضين का एक अर्थ यह भी किया गया है कि इसकी कुछ बातों पर ईमान रखना तथा कुछ के साथ इंकार करना ।

[2] اصدع का अर्थ स्पष्ट करके वर्णन करना, इस आयत के अवतरित होने से पूर्व आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छुपकर धर्म का प्रचार करते थे, इसके पश्चात आप

إِنَّا كَفَيْنَٰكَ ٱلْمُسْتَهْزِءِينَ ۝٩٥

(९५) आप से जो लोग उपहास करते हैं उनके (दण्ड) के लिए हम पर्याप्त हैं।

ٱلَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ ٱللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝٩٦

(९६) जो अल्लाह के साथ अन्य देवता (पूज्य) बनाते हैं, उन्हें शीघ्र ही ज्ञात हो जायेगा।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ۝٩٧

(९७) तथा हमें भली-भाँति ज्ञात है कि उनकी बातों से आपका दिल संकुचित होता है।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِّنَ ٱلسَّٰجِدِينَ ۝٩٨

(९८) आप अपने प्रभु की महिमा तथा प्रशंसा का वर्णन करते रहें। तथा शीश (सिर) झुकाने वालों में सम्मिलित हो जायें।

وَٱعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ ٱلْيَقِينُ ۝٩٩

(९९) तथा अपने प्रभु की इबादत करते रहें यहाँ तक कि आपको मृत्यु आ जाये।[1]

सूरतुन-नहल-१६

سُورَةُ النَّحْلِ

सूरः नहल मक्का में उतरी तथा इसकी एक सौ अटठाईस आयतें और सोलह रूकअ हैं।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह तआला के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

أَتَىٰٓ أَمْرُ ٱللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ ۚ

(१) अल्लाह (तआला) का आदेश आ पहुँचा, अब

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्पष्टरूप से धर्म का प्रचार-प्रसार करना प्रारम्भ कर दिया। (फ़तहुल क़दीर)

[1]मुशरेकीन जो अल्लाह की पूजा एवं गुणों में अन्य को साझी बनाते हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जादूगर, दीवाना, भविष्यवेत्ता आदि कहते जिससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मानवी प्रकृति के कारण दुखी हो जाते, अल्लाह तआला ने सांत्वना देते हुए फ़रमाया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह की प्रशंसा तथा गुणगान करें, नमाज़ पढ़ें तथा अपने प्रभु की इबादत करें, इससे आपको हार्दिक शान्ति भी प्राप्त होगी तथा अल्लाह की सहायता भी प्राप्त होगी। दण्डवत (सजदा से यहाँ नमाज़ तथा यक़ीन से मृत्यु तात्पर्य है।

سُبۡحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشۡرِكُونَ ①

इसकी शीघ्रता न मचाओ[1], सारी पवित्रता उसके लिए है वह श्रेष्ठतम है उन सबसे जिन्हें ये अल्लाह के निकट साझा बतलाते हैं ।

يُنَزِّلُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةَ بِٱلرُّوحِ مِنۡ أَمۡرِهِۦ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ مِنۡ عِبَادِهِۦٓ أَنۡ أَنذِرُوٓاْ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱتَّقُونِ ②

(२) वही फ़रिश्तों को अपनी प्रकाशना (वह्यी)[2] देकर अपने आदेश द्वारा अपने भक्तों में से जिस पर चाहता है,[3] उतारता है कि तुम लोगों को सचेत कर दो कि मेरे अतिरिक्त अन्य कोई पूजने योग्य नहीं, अतः तुम मुझसे डरो ।

---

[1]इससे तात्पर्य क़ियामत है, अर्थात वह क़ियामत निकट आ गयी है, जिसे तुम दूर समझते थे, तो शीघ्रता न मचाओ, अथवा वह प्रकोप तात्पर्य है, जिसकी मूर्तिपूजक माँग करते थे । उसे भविष्यकाल के बजाय भूतकाल में वर्णन किया है, क्योंकि उसका आना निश्चित है ।

[2] روح से तात्पर्य प्रकाशना (वह्यी) है, जैसाकि क़ुरआन मजीद में अन्य स्थान पर है ।

﴿وَكَذَٰلِكَ أَوۡحَيۡنَآ إِلَيۡكَ رُوحٗا مِّنۡ أَمۡرِنَاۚ مَا كُنتَ تَدۡرِي مَا ٱلۡكِتَٰبُ وَلَا ٱلۡإِيمَٰنُ﴾

"इसी प्रकार हमने आपकी ओर अपने आदेश से प्रकाशना (वह्यी) की, इससे पूर्व आपको ज्ञान नहीं था कि किताब क्या है तथा ईमान क्या है" (*सूरः अल-शूरा- ५२*)

[3]तात्पर्य नबी हैं जिन पर प्रकाशना (वह्यी) अवतरित हुई । जिस प्रकार अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ٱللَّهُ أَعۡلَمُ حَيۡثُ يَجۡعَلُ رِسَالَتَهُۥ﴾

"अल्लाह भली-भाँति जानता है कि वह कहाँ अपनी रिसालत रखे ।" (सूर *अल-अनाम-१२४*)

﴿يُلۡقِي ٱلرُّوحَ مِنۡ أَمۡرِهِۦ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ مِنۡ عِبَادِهِۦ لِيُنذِرَ يَوۡمَ ٱلتَّلَاقِ﴾

"वह अपने आदेश से अपने भक्तों में जिस पर चाहता है प्रकाशना (वह्यी) अवतरित करता है ताकि वे मिलन वाले दिन (क़यामत के दिन) से लोगों को डरायें ।" (*सूरः अल-मोमिन-१५*)

(३) उसी ने आकाशों तथा धरती को सत्यता के साथ उत्पन्न किया,[1] वह उससे स्वच्छ है जो मुशरिक (मिश्रणवादी) करते हैं।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ③

(४) उस ने मनुष्यों को वीर्य से पैदा किया फिर वह स्पष्ट झगड़ालू बन बैठा।[2]

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ④

(५) उसी ने पशु पैदा किये, जिनमें तुम्हारे लिए गर्मी के वस्त्र हैं, तथा अन्य भी बहुत-से लाभ हैं,[3] तथा कुछ तुम्हारे भोजन के काम आते हैं।

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ⑤

(६) तथा उनमें तुम्हारी शोभा भी है, जब चराकर लाओ तब भी और जब चराने ले जाओ तब भी।[4]

وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ⑥

---

[1]अर्थात मात्र आनन्द, आमोद-प्रमोद एवं खेल-कूद के लिए नहीं बनाया, अपितु एक उद्देश्य है तथा वह है उपहार तथा दण्ड, जैसाकि विस्तार से अभी गुज़र चुका है।

[2]अर्थात एक निर्जीव वस्तु से जो एक जीवधारी के अन्दर से निकलती है, जिसे वीर्य कहा जाता है। उसे विभिन्न अवस्थाओं से गुज़ार कर एक पूर्ण रूप प्रदान करता है, फिर उसमें अल्लाह तआला आत्मा फूँकता है तथा माता के गर्भ से निकालकर संसार में लाता है, जिसमें वह जीवन व्यतीत करता है, परन्तु जब उसे समझ आती है तो उसी प्रभु के मामले में झगड़ता है, उसको अस्वीकार करता अथवा उसके साथ साझीदार ठहराता है।

[3]इस (अनुग्रह) के साथ अन्य अनुग्रह का वर्णन किया कि चौपाये (ऊँट, गाय तथा बकरियाँ) भी उसी ने पैदा किये, जिनके बालों से तुम ऊन तथा गर्म कपड़े तैयार करके गर्मी प्राप्त करते हो। इसी प्रकार उनसे अन्य लाभ प्राप्त करते हो, जैसे उनसे दूध प्राप्त करते हो, उन पर सवारी करते तथा सामान लादते हो, उनके द्वारा हल चलाते तथा खेतों की सिंचाई करते हो आदि।

[4] تريحون का अर्थ है जब शाम को चराकर घर वापस लाओ, تسرحون जब प्रातः चराने के लिए ले जाओ, इन दोनों समयों में यह लोगों की दृष्टि में आते हैं जिससे तुम्हारे सौन्दर्य तथा सुन्दरता में बढ़ोत्तरी होती है। इन दोनों समयों के अतिरिक्त वे दृष्टि से ओझल रहते हैं अथवा बाड़ों में बन्द रहते हैं।

(७) तथा वह तुम्हारे बोझ उन नगरों तक उठाकर ले जाते हैं, जहाँ तुम बिना आधे प्राण किये पहुँच नहीं सकते थे। निःसंदेह तुम्हारा प्रभु बड़ा ही करूणाकारी तथा अत्यन्त कृपालु है।

وَتَحۡمِلُ أَثۡقَالَكُمۡ إِلَىٰ بَلَدٍ لَّمۡ تَكُونُواْ بَٰلِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ ٱلۡأَنفُسِۚ إِنَّ رَبَّكُمۡ لَرَءُوفٞ رَّحِيمٞ ۝٧

(८) तथा घोड़ों को, खच्चरों को, गधों को (उसने पैदा किया) ताकि तुम उनको याता-यात के साधन के रूप में प्रयोग में ले आओ तथा वे शोभा का साधन भी हैं।[1] अन्य भी वह

وَٱلۡخَيۡلَ وَٱلۡبِغَالَ وَٱلۡحَمِيرَ لِتَرۡكَبُوهَا وَزِينَةٗۚ وَيَخۡلُقُ مَا لَا تَعۡلَمُونَ ۝٨

---

[1]अर्थात उनको पैदा करने का मूल उद्देश्य एवं लाभ तो उन पर सवारी करना है, फिर भी यह शोभा हेतु भी हैं। घोड़े, खच्चर, तथा गधों का अलग से वर्णन करने से कुछ विचारकों ने अर्थ निकाला है कि घोड़ा भी उसी प्रकार निषेध (हराम) है जिस प्रकार गधा तथा खच्चर। इसके अतिरिक्त खाने वाले पशुओं का वर्णन पूर्व में आ चुका है। इसलिए इस आयत में जिन तीन पशुओं का वर्णन है, यह केवल वाहन (सवारी) के लिए है। परन्तु यह अर्थ इसलिए उचित नहीं क्योंकि हदीस में घोड़ा खाने का औचित्य प्रमाणित है। आदरणीय जाबिर (رضي الله عنه) का कथन है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने घोड़ों का माँस खाने की आज्ञा दी है। «أَذِنَ فِي لُحُومِ الْخَيلِ».(सहीह बुख़ारी किताबुल जबाएह बाबु लुहूमिल ख़ैले तथा सहीह मुस्लिम किताबुस सैदे बाब फ़ी अकले लुहूमिल ख़ैले)। इसके अतिरिक्त सहाबा कराम ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उपस्थिति में ख़ैबर तथा मदीने में घोड़े को बध करके उसका माँस पकाया तथा खाया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना नहीं किया। (देखिये सहीह मुस्लिम उपरोक्त वर्णित अध्याय में तथा मुसनद अहमद भाग ३, पृष्ठ ३५६, अबू दाऊद किताबुल अतएमः, बाब फ़ी अकले लुहूमिल ख़ैले)। इसलिए अधिकाँश आलिम, तथा सलफ़ तथा उनके पश्चात के अधिकाँश घोड़े के माँस का उचित (हलाल) होने के पक्ष में हैं। (तफ़सीर इब्ने कसीर) यहाँ घोड़े का वर्णन सवारी के विषय में इसलिए किया गया है कि इसका अधिकतर प्रयोग इसी उद्देश्य से है, वह सम्पूर्ण संसार में इतना मूल्यवान है कि इसका भोजन के रूप में प्रयोग अत्यधिक कठिन है। भेड़, बकरी की भाँति इसका बध नहीं किया जाता। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि इसको बिना किसी प्रमाण के अनुचित (हराम) ठहरा दिया जाये।

ऐसी वस्तुएँ पैदा करता है जिनका तुम्हें ज्ञान भी नहीं ।[1]

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ ۭ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝

(९) तथा अल्लाह पर सीधा मार्ग बता देना है ।[2] तथा कुछ टेढ़े मार्ग हैं । तथा यदि वह चाहता तो तुम सबको सीधे मार्ग पर लगा देता ।[3]

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝

(१०) वही तुम्हारे लाभ के लिए आकाश से वर्षा करता है, जिसे तुम पीते भी हो तथा उसी से उगे हुए वृक्षों को तुम अपने पशुओं को चराते हो ।

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

(११) इसी से वह तुम्हारे लिए खेती एवं जैतून तथा खजूर और अंगूर एवं हर प्रकार के फल उगाता है । निःसंदेह विचार करने वाले लोगों के लिए तो इसमें बड़ी निशानियाँ हैं ।[4]

---

[1]धरती के निचले भाग में, इसी प्रकार समुद्र में, तथा निर्जल मरूस्थल में तथा वनों में अल्लाह तआला जीवधारी उत्पन्न करता है, जिनका ज्ञान अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी को नहीं तथा उसी में मनुष्य द्वारा निर्मित वस्तुयें भी आ जाती हैं, जो अल्लाह तआला की प्रदान की हुई बुद्धि तथा विचार को प्रयोग करते हुए उसी की उत्पन्न की हुई विभिन्न वस्तुओं को विभिन्न प्रकार से जोड़कर निर्मित करता है, जैसे बस, कार, रेलगाड़ी, जहाज़ तथा वायुयान एवं इसी प्रकार की असंख्य वस्तुएँ तथा जो भविष्य में भी आती रहेंगी ।

[2]इसका एक अर्थ है "तथा अल्लाह ही पर है सीधा मार्ग ।" अर्थात उसका वर्णन करना । अतः उसने उसे वर्णित कर दिया तथा प्रकाश तथा अंधकार दोनों को स्पष्ट कर दिया, इसीलिए आगे कहा कि कुछ मार्ग टेढ़े हैं अर्थात भटकाने वाले हैं ।

[3]परन्तु इसमें चूँकि दबाव होता तथा मनुष्य की परीक्षा न होती, इसलिए अल्लाह ने अपनी इच्छा से सभी को बाध्य नहीं किया । अपितु दोनों मार्गों के विषय में बता कर मनुष्य को अपनी इच्छा तथा अधिकार की स्वतन्त्रता प्रदान कर दी ।

[4]इसमें वर्षा के वे लाभ वर्णित किये गये हैं, जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति देखता तथा अनुभव करता है, यह किसी को बताने की आवश्यकता नहीं, इसके अतिरिक्त इनका वर्णन पहले भी आ चुका है ।

(१२) तथा उसी ने रात-दिन तथा सूर्य एवं चन्द्रमा को तुम्हारी सेवा में लगा रखा है तथा सितारे भी उसी के आदेश के अधीन हैं। नि:संदेह इसमें बुद्धि वालों के लिए कई प्रकार की निशानियाँ विद्यमान हैं।[1]

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۗ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿١٢﴾

(१३) तथा अन्य भी (नाना प्रकार की) वस्तुएँ विभिन्न रंग-रूप की उसने तुम्हारे लिए धरती में फैला रखी हैं। नि:संदेह शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिए इसमें बड़ी भारी निशानियाँ हैं।[2]

وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣﴾

(१४) तथा नदियाँ भी उसी ने तुम्हारे वश में कर दी हैं कि तुम इसमें से निकला हुआ ताज़ा माँस खाओ तथा उसमें से अपने पहनने के लिए आभूषण निकाल सको। और तुम देखोगे कि नवकायें इसमें पानी चीरती हुई (चलती) हैं तथा इसलिए भी कि तुम उस की कृपा की खोज करो तथा हो सकता है कि तुम कृतज्ञता भी व्यक्त करो।[3]

وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٤﴾

---

[1]किस प्रकार रात तथा दिन छोटे तथा बड़े होते हैं, चन्द्रमा तथा सूर्य किस प्रकार अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं तथा उनमें कोई अन्तर नहीं उत्पन्न होता, सितारे किस प्रकार आकाश की शोभा हैं तथा रात के अन्धेरों में खोये हुए लोगों तथा यात्रियों के लिए पथ प्रदर्शक हैं। ये सब अल्लाह तआला के पूर्ण सामर्थ्य तथा विस्तृत राज्य के प्रमाण हैं।

[2]अर्थात धरती में अल्लाह ने जो खनिज, वनस्पति, निर्जीव तथा जीवधारी एवं उनसे होने वाले लाभ तथा विशेषता उत्पन्न किये हैं, उनमें भी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए निशानियाँ हैं।

[3]इसमें समुद्र की तीव्र धाराओं को मनुष्य के अधीन कर देने के वर्णन के साथ, उसके तीन लाभ भी वर्णित किये गये हैं। एक यह कि उससे मछली के रूप में ताज़ा माँस

وَأَلْقَىٰ فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥﴾

(१५) तथा उसने धरती पर पर्वत गाड़ दिये हैं ताकि तुम्हें लेकर न हिले ।[1] तथा नदियाँ एवं मार्ग बना दिये ताकि तुम लक्ष्य तक पहुँचो ।[2]

وَعَلَامَاتٍ ۚ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ ﴿١٦﴾

(१६) अन्य भी बहुत-सी निशानियाँ (निर्धारित की) । तथा सितारों से भी लोग मार्ग प्राप्त करते हैं ।

أَفَمَن يَخْلُقُ كَمَن لَّا يَخْلُقُ ۗ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٧﴾

(१७) तो क्या वह जो पैदा करे उस जैसा है जो पैदा नहीं कर सकता ? क्या तुम कदापि नहीं सोंचते ?[3]

खाते हो (तथा मछली मरी भी हो तब भी हलाल है । यहाँ तक कि एहराम की अवस्था में भी उसका शिकार हलाल है) दूसरे उससे तुम मोती, सीपियाँ, (जवाहरात) निकालते हो । तीसरे इसमें तुम नाव तथा जहाज़ चलाते हो, जिनके द्वारा तुम एक देश से दूसरे देश जाते हो, व्यापारिक सामग्रियाँ भी लाते ले जाते हो, जिससे तुम्हें अल्लाह की अनुकम्पा प्राप्त होती है, जिस पर तुम्हें अल्लाह का कृतज्ञ होना चाहिए ।

[1]यह पर्वतों का लाभ वर्णन किया जा रहा है । तथा अल्लाह का एक महान उपकार भी, क्योंकि यदि धरती हिलती रहती तो धरती पर निवास करना ही असम्भव होता । इसका अनुमान उन भूकम्पों से लगाया जा सकता है जो क्षणिक अथवा कुछ देर के लिए आते हैं, परन्तु किस प्रकार ऊँची-ऊँची भवनों को धराशायी करके नगरों को खण्डहर में परिवर्तित कर देते हैं ।

[2]नदियों का क्रम भी विचित्र है, कहाँ से वे प्रारम्भ होती हैं तथा कहाँ-कहाँ, दायें-बायें, उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम प्रत्येक दिशा को सींचती हैं । इसी प्रकार मार्ग बनाये, जिसके द्वारा तुम अपने लक्ष्य तक पहुँचते हो ।

[3]इन सभी अनुकम्पाओं तथा उपकारों के वर्णन से एकेश्वर के महत्व को स्पष्ट तथा प्रदर्शित किया कि अल्लाह तो इन सभी वस्तुओं का स्रष्टा है, परन्तु उसको छोड़कर जिनकी तुम पूजा करते हो, उन्होंने भी कुछ उत्पन्न किया है ? नहीं, अपितु वे तो स्वयं अल्लाह की सृष्टि हैं । तो फिर किस प्रकार स्रष्टा एवं सृष्टि समान हो सकते हैं ? जबकि तुमने स्वयं उन्हें ईष्टदेव बनाकर अल्लाह के समान साझी ठहरा रखा है । क्या तुम तनिक भी विचार नहीं करते ?

وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ⑱

(१८) तथा यदि तुम अल्लाह की अनुकम्पाओं की गणना करना चाहो, तो तुम उसे नहीं कर सकते। निःसंदेह अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला कृपालु है।

وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ⑲

(१९) तथा जो कुछ तुम छिपाओ अथवा व्यक्त करो, अल्लाह सब कुछ जानता है।[1]

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ⑳

(२०) तथा जिन-जिन को ये लोग अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त पुकारते हैं, वे किसी वस्तु को पैदा नहीं कर सकते, अपितु वे स्वयं पैदा किये हुए हैं।[2]

أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ ۖ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ㉑

(२१) मृत हैं जीवित नहीं,[3] उन्हें तो यह भी ज्ञात नहीं कि कब उठाये जायेंगे।[4]

إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۚ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُمْ

(२२) तुम सभी का पूज्य मात्र अल्लाह (तआला) अकेला है तथा परलोक (आख़िरत) पर ईमान

---

[1]तथा इसके अनुसार वह क़यामत के दिन फल तथा दण्ड देगा। सत्कर्मियों को सत्कर्म का बदला मिलेगा तथा कुकर्मियों को कुकर्म का दण्ड।

[2]इसमें एक वस्तु की अधिकता है अर्थात विशेष गुण (रचयिता होने) के इंकार के साथ न्यूनता अर्थात कमी (रचयिता न होने) को प्रमाणित करना। (फ़तहुल क़दीर)

[3]मृत से तात्पर्य वह पाषाण (पत्थर) भी हैं जो निर्जीव तथा निर्बोध हैं तथा मरे हुए महात्मा भी हैं। क्योंकि मरने के पश्चात उठाया जाना (जिसका उन्हें ज्ञान नहीं) वह तो निर्जीव के अतिरिक्त महात्मा पर सत्य सिद्ध हो सकता है। उनको केवल मृत नहीं कहा, अपितु और अधिक स्पष्ट कर दिया कि, "वह जीवित नहीं हैं।" इससे क़ब्र पूजन करने वालों का भी स्पष्ट खण्डन होता है, जो कहते हैं कि क़ब्र में गड़े मृत नहीं जीवित हैं तथा हम जीवितों को ही पुकारते हैं। अल्लाह तआला के इस कथन से ज्ञात हुआ कि मृत्यु हो जाने के पश्चात सांसारिक जीवन किसी को नहीं प्राप्त हो सकता, न संसार से उनका कोई सम्बन्ध शेष रहता है।

[4]फिर उनसे लाभ की तथा पुण्य व प्रतिफल की आशा कैसे की जा सकती है।

مُّنكِرَةٌ وَهُم مُّسْتَكْبِرُونَ ﴿٢٢﴾

न रखने वालों के दिल भ्रष्ट (निवर्ती) हैं तथा वे स्वयं गर्व से परिपूर्ण हैं ।[1]

لَا جَرَمَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ﴿٢٣﴾

(२३) नि:संदेह अल्लाह (तआला) हर उस वस्तु को जिसको वे छिपाते हैं तथा जिसे व्यक्त करते हैं, भली-भाँति जानता है। वह अभिमानियों को प्रिय नहीं रखता ।[2]

وَإِذَا قِيلَ لَهُم مَّاذَا أَنزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा उनसे जब पूछा जाता है कि तुम्हारे प्रभु ने क्या उतारा है, तो उत्तर देते हैं कि पूर्वजों की कथायें हैं ।[3]

---

[1]अर्थात एक पूज्य को मानना नास्तिकों तथा अनेकेश्वर-वादियों के लिए अत्यन्त कठिन है। वह कहते हैं।

﴿أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ﴾

"उसने सभी पूजनीयों को एक ही पूज्य कर दिया है यह तो अत्यन्त विचित्र बात है।" (सूर: साद-५)

अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ﴾

"जब एक अल्लाह का वर्णन किया जाता है तो आख़िरत को नकारने वालों के दिल संकुचित हो जाते हैं तथा जब अल्लाह के अतिरिक्त अन्य देवताओं का वर्णन किया जाता है, तो प्रसन्न होते हैं।" (सूर: अज़्-ज़ुमर-४५)

[2] استكبار का अर्थ होता है कि अपने आपको बड़ा समझते हुए सत्य तथा उचित बात को अस्वीकार कर देना तथा अन्य व्यक्तियों को तुच्छ एवं हीन समझना। كبر की यही परिभाषा हदीस में भी वर्णन की गयी है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब तहरीमिल किब्रे व बयानेहि) यह घमंड तथा अहंकार अल्लाह को अति अप्रिय है। हदीस में है कि वह व्यक्ति स्वर्ग में नहीं जायेगा जिसके हृदय में लेश मात्र भी घंमड होगा। (उपरोक्त संदर्भ)

[3]अर्थात विमुखता तथा उपहास का प्रदर्शन करते हुए ये झूठे उत्तर देते हैं कि अल्लाह तआला ने तो कुछ नहीं उतारा तथा यह मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हमें जो पढ़कर सुनाता है, वह तो पूर्व कालिक कथायें हैं, जो कहीं से सुनकर वर्णन करता है।

لِيَحْمِلُوٓا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّونَهُم بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ أَلَا سَآءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٢٥﴾

(२५) (इसी का परिणाम होगा) कि क़ियामत के दिन ये लोग अपने पूर्ण बोझ के साथ ही उनके बोझ के भी भागीदार होंगे जिन्हें अज्ञानवश भटकाते रहे। देखो तो कैसा बुरा बोझ उठा रहे हैं।[1]

قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللَّهُ بُنْيٰنَهُم مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِن فَوْقِهِمْ وَأَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

(२६) उनसे पूर्व के लोगों ने भी छल किया था। (अन्त में) अल्लाह ने उनके (षड़यन्त्र के) घरों को जड़ों से उखाड़ दिया तथा उनके (सिरों पर) छतें ऊपर से[2] गिर पड़ीं तथा उनके पास प्रकोप वहाँ से आ गया जहाँ का उन्हें ध्यान तथा विचार भी न था।[3]

---

[1]अर्थात उनके मुख से यह बात अल्लाह तआला ने निकलवायी ताकि वे लोग अपने बोझों के अतिरिक्त अन्यों का भी बोझ उठायें। जिस प्रकार से हदीस में है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "जिसने लोगों को संमार्ग की ओर बुलाया, तो उस व्यक्ति को उन सभी व्यक्तियों का भी बदला मिलेगा जो उसके आमन्त्रण पर सत्य का मार्ग अपनायेंगे तथा जिसने भटकावे की ओर बुलाया, तो उसको उन सभी लोगों के पाप का भार भी उठाना पड़ेगा, जो उसके प्रयत्न पर भटके।" (अबू दाऊद किताबुस सुन्न: बाबु लोज़ूमिस्न सुन्न:)

[2]कुछ व्याख्याकार इस्राईली कथाओं के आधार पर कहते हैं कि इससे तात्पर्य नमरूद अथवा बुख़्त नस्सर है, जो किसी प्रकार आकाश की ओर चढ़कर अल्लाह के विरूद्ध षड़यन्त्र किया, परन्तु वे विफल होकर वापस आ गये तथा कुछ व्याख्याकारों के निकट एक उदाहरण है जिससे यह बताना उद्देश्य है कि अल्लाह के साथ कुफ़्र तथा साझी बनाने वालों के कर्म इसी प्रकार विफल होंगे, जिस प्रकार किसी के घर की नींव हिल जाये, तथा वे छत सहित गिर पड़े। परन्तु अधिक उचित बात यह है कि इसका उद्देश्य उन समुदायों के परिणाम की ओर संकेत करना है, जिन समुदायों ने पैग़म्बरों को निरन्तर झुठलाया तथा अन्त में अल्लाह के प्रकोप के भोगी होकर अपने घरों सहित ध्वस्त हो गये। जैसे आद का समुदाय तथा लूत का समुदाय आदि।

[3]जिस प्रकार से अन्य स्थान पर है।

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٧﴾

(२७) फिर क़ियामत के दिन भी अल्लाह (तआला) उन्हें अपमानित करेगा तथा कहेगा कि मेरे वे साझीदार कहाँ हैं जिनके विषय में तुम लड़ते-झगड़ते थे ।[1] जिन्हें ज्ञान दिया गया था वे उत्तर देंगे[2] कि आज तो काफ़िरों को अपमान तथा बुराई चिमट गयी ।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۪ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى

(२८) वह जो अपने प्राणों पर अत्याचार करते हैं, फ़रिश्ते जब उनके प्राण निकालने लगते हैं तो उस समय वे संधि की बात डालते हैं कि हम बुराई नहीं करते थे ।[3] क्यों नहीं ? अल्लाह

"तो अल्लाह (का प्रकोप) उनके पास ऐसे स्थान से आया जहाँ से उन्होंने कभी सोचा भी न था ।" (सूर: *अल-हश्र*-२)

[1]अर्थात यह तो वे प्रकोप थे जो उन पर संसार में आये तथा क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उन्हें इस प्रकार अपमानित तथा निरादर करेगा कि उनसे पूछेगा, तुम्हारे वे भागीदार कहाँ हैं, जो तुमने मेरे लिए बना रखे थे तथा जिनके कारण तुम ईमानवालों से लड़ते-झगड़ते थे ।

[2] अर्थात जिनको धर्म का ज्ञान था, वे धर्म पर दृढ़ थे वे उत्तर देंगे ।

[3]यह मूर्तिपूजक अत्याचारियों की मृत्यु के समय की अवस्था का वर्णन है । जब फ़रिश्ते उनकी (प्राण) आत्मायें निकालते हैं तो वे संधि की बात डालते हैं अर्थात सुनने, मानने तथा लाचारी का प्रदर्शन करते हुए कहते हैं कि हम तो बुराई नहीं करते थे । जिस प्रकार प्रलय के मैदान में अल्लाह के समक्ष भी झूठी सौगन्ध खायेंगे तथा कहेंगे ।

﴿ وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴾

"अल्लाह की सौगन्ध हम मुशरिक (मिश्रणवादी) नहीं थे ।" (सूर: *अल-अनाम*-२३)

अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ ﴾

"जिस दिन अल्लाह तआला उन सबको जीवित कर (अपने समक्ष एकत्रित करेगा) तो अल्लाह के समक्ष भी ये इसी प्रकार (झूठी) सौगन्ध खायेंगे, जिस प्रकार तुम्हारे समक्ष सौगन्ध खाते हैं ।" (सूर: *अल-मुजादिल:*-१८)

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾

(तआला) भली-भाँति जानने वाला है, जो कुछ तुम करते थे।[1]

فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٢٩﴾

(२९) तो अब तुम सदा के लिए नरक के द्वारों (से नरक) में प्रवेश करो,[2] तो क्या ही बुरा स्थान है अहंकार करने वालों का।

وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا مَاذَا أَنزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوا خَيْرًا لِّلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा सदाचारियों से प्रश्न किया जाता है कि तुम्हारे पालनहार ने क्या अवतरित किया है। तो वह उत्तर देते हैं कि अच्छे से अच्छा। जिन लोगों ने सत्कर्म किये उन के लिए इस लोक में भलाई है, तथा वस्तुतः परलोक का घर तो अत्योत्तम है, तथा क्या ही उत्तम सदाचारियों का घर है।

جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ كَذَٰلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣١﴾

(३१) सदा रहने वाले बाग़ में वे जायेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जो वह माँग करेंगे वहाँ उनके लिए उपस्थित होंगी, सदाचारियों को अल्लाह ऐसे ही प्रतिफल प्रदान करता है।

الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمُ

(३२) वे जिनके प्राण फ़रिश्ते ऐसी अवस्था में निकालते हैं कि वह स्वच्छ पवित्र हों कहते हैं कि तुम्हारे लिये शान्ति ही शान्ति है, अपने

[1]फ़रिश्ते उत्तर देंगे क्यों नहीं ? अर्थात तुम झूठ बोलते हो। तुम्हारी तो पूरी आयु ही बुराईयों में व्यतीत हुई है। तथा अल्लाह के पास तुम्हारे सभी कर्मों का लेख सुरक्षित है, तुम्हारे इस नकारने से क्या बनेगा ?

[2]इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि उनकी मृत्यु के पश्चात तुरन्त उनकी आत्मायें नरक में चली जाती हैं, तथा उनके शव समाधि (क़ब्र) में रहते हैं जहाँ अल्लाह अपने सामर्थ्य से शरीर तथा आत्मा में दूरी होते हुए भी एक प्रकार का लगाव पैदा करके यातना देता है तथा प्रातः, संध्या उन पर आग प्रस्तुत की जाती है। फिर जब प्रलय स्थापित होगा उनकी आत्मा उनके शरीरों में पुनः आ जायेंगी तथा वे सदा के लिए नरक में डाल दिये जायेंगे।

ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٢﴾

उन कर्मों के बदले स्वर्ग में जाओ जो तुम कर रहे थे ।[1]

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٣﴾

(३३) क्या यह इसी बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आ जायें अथवा तेरे प्रभु का आदेश आ जाये ?[2] ऐसा ही उन लोगों ने भी किया जो इन से पूर्व थे ।[3] उन पर अल्लाह (तआला) ने कोई अत्याचार नहीं किया ।[4] अपितु वह स्वयं अपने प्राणों पर अत्याचार करते रहे ।[5]

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٤﴾

(३४) तो उनके कुकर्मों का कुफल उन्हें मिल गया तथा जिसका उपहास उड़ाते थे, उसने उन को घेर लिया ।[6]

---

[1]इन आयतों में अत्याचारी मूर्तिपूजकों की तुलना में ईमानवालों के आचरण एवं उनके शुभ अन्त (परिणाम) का वर्णन किया गया है ।

[2]अर्थात क्या वह भी उस समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब फ़रिश्ते उनकी आत्मायें निकालेंगे अथवा प्रभु का आदेश (अर्थात प्रकोप अथवा क़ियामत) आ जाये ।

[3]अर्थात इस प्रकार की दुष्टता तथा अवज्ञा, उनसे पूर्व के लोगों ने भी अपनायी, जिसके कारण वे अल्लाह के क्रोध के अधिकारी बने ।

[4]इसलिए कि अल्लाह ने उनके लिए कोई बहाना ही शेष नहीं छोड़ा । रसूलों को भेजकर तथा किताबें अवतरित करके उन पर तर्क को पूर्ण कर दिया ।

[5]अर्थात रसूलों का विरोध तथा उनको झुठलाकर स्वयं ही उन्होंने अपने आप पर अत्याचार किया ।

[6]अर्थात जब रसूल उनसे कहते कि यदि तुम उन पर ईमान नहीं लाओगे तो अल्लाह का प्रकोप आ जायेगा, तो ये उपहास स्वरूप कहते कि जा अपने अल्लाह से कह दे कि वह प्रकोप भेजकर हमें नाश कर दे । अतः उस प्रकोप ने उन्हें घेर लिया जिसका वह उपहास करते थे, फिर उससे बचाव का कोई मार्ग उनके पास नहीं रहा ।

(३५) तथा मिश्रणवादियों (मुशरिकों) ने कहा यदि अल्लाह (तआला) चाहता तो हम तथा हमारे पूर्वज उसके अतिरिक्त अन्य की पूजा न करते न उसके आदेश के बिना किसी वस्तु को हराम करते। यही कर्म उनसे पूर्व के लोगों का रहा। तो रसूलों पर तो केवल स्पष्टतया संदेश पहुँचा देना है।[1]

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِن دُونِهِ مِن شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِن دُونِهِ مِن شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٣٥﴾

(३६) तथा हमने प्रत्येक समुदाय में रसूल भेजे कि (लोगो) ! केवल अल्लाह की उपासना (इबादत) करो तथा राक्षसों (उसके अतिरिक्त सभी मिथ्या पूज्यों) से बचो। तो कुछ लोगों

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ۖ فَمِنْهُم مَّنْ هَدَى اللَّهُ

---

[1]इस आयत में अल्लाह तआला ने मुशरिकों के एक भ्रम तथा भ्रान्ति का निवारण किय है, वे कहते थे कि हम जो अल्लाह को छोड़कर अन्यों की पूजा करते हैं अथवा उसके आदेश के बिना ही कुछ वस्तुओं को वर्जित (हराम) कर लेते हैं, यदि हमारी यह बातें अनुचित हैं तो अल्लाह तआला अपने सामर्थ्य से हमें उनसे रोक क्यों नहीं देता ? वह यदि चाहे तो हम इन कार्यों को कर ही नहीं सकते। यदि वह नहीं रोकता तो इसका अर्थ यह है कि हम जो कुछ कर रहे हैं, उसकी इच्छानुसार है। अल्लाह तआला ने उनके इस भ्रम का निवारण, "रसूलों का कार्य केवल पहुँचा देना है" कहकर कर दिया। अर्थ यह है कि तुम्हारा यह भ्रम उचित नहीं है। अल्लाह तआला ने तो तुम्हें इन मिश्रण के कार्यों से अति कड़ाई से रोका है। इसलिए प्रत्येक समुदाय में वह रसूल भेजता तथा किताबें अवतरित करता रहा है। तथा प्रत्येक नबी ने आकर सर्वप्रथम अपने समुदाय को शिर्क ही से बचाने का प्रयत्न किया है। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि अल्लाह तआला कदापि यह नहीं चाहता कि लोग शिर्क करें क्योंकि यदि उसे प्रिय होता तो इनके खण्डन के लिए वह रसूल क्यों भेजता ? परन्तु इसके उपरान्त भी तुमने रसूलों को झुठलाकर शिर्क का मार्ग अपनाया तथा अल्लाह ने अपनी उत्पत्ति नीति के कारण बल पूर्वक तथा दबाव से नहीं रोका, तो यह उसके विवेक तथा नीति का एक भाग है जिसके अन्तर्गत उसने मनुष्यों को अपनी इच्छा के अनुरूप चलने की स्वतन्त्रता प्रदान कर रखी है। क्योंकि इसके बिना उनकी परीक्षा सम्भव नहीं थी। हमारे रसूल हमारा संदेश पहुँचाकर यही समझाते रहे कि इस स्वतन्त्रता का दुरूपयोग न करो, अपितु उसे अल्लाह की प्रसन्नता के अनुरूप प्रयोग करो। हमारे रसूल यही कुछ कर सकते थे, जो उन्होंने किया। तथा तुमने शिर्क करके उसका दुरूपयोग किया जिसका दण्ड स्थाई यातना है।

وَمِنْهُم مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ ۚ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٦﴾

को अल्लाह ने मार्गदर्शन प्रदान किया तथा कुछ पर कुमार्गता सिद्ध हो गई।[1] अब तुम स्वयं धरती पर भ्रमण करके देख लो कि झुठलाने वालों का फल कैसा हुआ।

إِن تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَن يُضِلُّ ۖ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٣٧﴾

(३७) यद्यपि आप उनके मार्गदर्शन के इच्छुक रहे हैं किन्तु अल्लाह (तआला) उसे मार्ग-दर्शन नहीं देता है, जिसे भटका दे तथा न कोई उनका सहायक होता है।[2]

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَن يَمُوتُ ۚ بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾

(३८) तथा वे लोग बहुत बड़ी-बड़ी सौगन्ध खाकर कहते हैं कि मरे हुए लोगों को अल्लाह (तआला) जीवित नहीं करेगा।[3] क्यों नहीं, (अवश्य जीवित करेगा) यह तो उसका सत्य अनिवार्य वचन है, परन्तु अधिकतर लोग अज्ञानता कर रहे हैं।[4]

---

[1]वर्णित शंका के समाधान के लिए और अधिक फ़रमाया कि हमने प्रत्येक समुदाय में रसूल भेजा तथा यह संदेश उनके द्वारा पहुँचाया कि मात्र एक अल्लाह की इबादत करो। परन्तु जिन पर भटकाव सिद्ध हो चुका था उन्होंने इसकी चिन्ता ही नहीं की।

[2]इसमें अल्लाह फ़रमा रहा है : हे पैग़म्बर ! तेरी इच्छा तो यही है कि यह सभी मार्गदर्शन का मार्ग अपना लें, परन्तु अल्लाह के नियमों के अधीन जो भटक गये हैं, उनको प्रकाश के मार्ग पर तू नहीं ला सकता। यह तो अपने अन्तिम परिणाम को पहुँचकर रहेंगे, जहाँ इनकी कोई सहायता न करेगा।

[3]क्योंकि मिट्टी में मिल जाने के पश्चात उनका पुनः जीवित होना, उन्हें दूर तथा असम्भव प्रतीत होता था। इसीलिए रसूल जब मृत्यु के पश्चात पुनः खड़े होने की बात कहता है, तो उसे झुठलाते हैं, उसको स्वीकार नहीं करते, अपितु इसके विपरीत पुनः जीवित न होने पर सौगन्ध खाते हैं, सौगन्ध भी बलपूर्वक एवं पूर्ण विश्वास के साथ।

[4]इसी अज्ञानता तथा मूर्खता के कारण रसूलों का विरोध करते तथा झुठलाते हुए कुफ़्र के समुद्र में डूब जाते हैं।

(३९) इसलिए भी कि ये लोग जिस बात में मतभेद करते थे, उसे अल्लाह (तआला) साफ वर्णन कर दे तथा इसलिए भी कि काफिर स्वयं अपना झूठा होना जान लें ।[1]

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ﴿٣٩﴾

(४०) हम जब किसी चीज़ की इच्छा करते हैं तो केवल हमारा इतना कह देना होता है कि हो जा बस वह हो जाती है ।[2]

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾

(४१) तथा जिन लोगों ने अत्याचार सहन करने के पश्चात अल्लाह के मार्ग में देश छोड़ा है[3]

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ

---

[1]यह प्रलय (क़ियामत) आने के कारण तथा रहस्य का वर्णन हो रहा है कि उस दिन अल्लाह तआला उन बातों पर निर्णय करेगा जिन पर ये लोग आपस में मतभेद रखते थे तथा सत्यवादियों तथा अल्लाह से डरने वालों कोअच्छा फल तथा अधर्मी तथा अवज्ञाकारियों को उनके कुकर्मों का दण्ड देगा। इसके अतिरिक्त उस दिन काफ़िरों पर भी यह स्पष्ट हो जायेगा कि वह क़ियामत के न आने पर जो सौगन्ध खाते थे, उनमें वे झूठे थे।

[2]अर्थात लोगों के विचार से प्रलय (क़ियामत) का होना कितना भी कठिन अथवा असम्भव हो परन्तु अल्लाह के लिए तो कोई कठिन नहीं, उसे धरती तथा आकाश ध्वस्त करने के लिए मज़दूरों, इंजीनियरों तथा मिस्त्रियों तथा अन्य संसाधन की आवश्यकता नहीं। उसे तो मात्र शब्द كُن (कुन) कहना है, उसके शब्द كُن (कुन) से पलक झपकते क़ियामत व्याप्त हो जायेगी।

﴿ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ ﴾

"क़ियामत का मामला पलक झपकते अथवा उससे भी कम अवधि में घटित हो जायेगा ।" (*सूर: अल-नहल-७७*)

[3]हिजरत का अर्थ है कि अल्लाह के धर्म के लिए, अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अपना देश, अपने सम्बन्धी तथा मित्र एवं साथियों को छोड़कर ऐसे क्षेत्र में चला जाना, जहाँ सरलतापूर्वक अल्लाह का कार्य किया जा सके। इस आयत में मुहाजिरों की विशेषता का वर्णन किया गया है । यह आयत सामान्य है जो सभी मुहाजिरों को सम्मिलित करती है तथा यह भी सम्भव है कि यह उन मुहाजिरों के विषय में अवतरित हुई हो, जो अपने समुदाय के कष्ट देने से पीड़ित होकर इथोपिया स्थानान्तरित हो गये थे।

مَا ظُلِمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

हम उन्हें सर्वश्रेष्ठ स्थान संसार में प्रदान करेंगे,[1] तथा आख़िरत का प्रतिफल तो बहुत बड़ा है,[2] काश ! लोग इससे परिचित होते।

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) वे जिन्होंने धैर्य धारण किया तथा अपने प्रभु पर ही भरोसा करते रहे।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ ۚ فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा आप से पूर्व भी हम मानव पुरूष को ही भेजते रहे जिनकी ओर प्रकाशना (वह्यी) उतारा करते थे। यदि तुम नहीं जानते, तो विद्वानों से पूछ लो।[3]

उनकी संख्या स्त्रियों सहित एक सौ अथवा उससे अधिक थी, जिसमें आदरणीय उस्मान ग़नी तथा उनकी पत्नी, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पुत्री रूक़ैय्या भी थीं।

[1]इससे पवित्र जीविका एवं कुछ विद्वानों ने 'मदीना' तात्पर्य लिया है, जो मुसलमानों का केन्द्र बना। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि दोनों कथनों में प्रतिकूलता नहीं है। इसलिए कि जिन लोगों ने अपने व्यापार तथा घर छोड़कर स्थानान्तरण (हिजरत) किया था अल्लाह तआला ने संसार में ही उनका बदला प्रदान कर दिया। 'पवित्र जीविका' भी दी तथा सम्पूर्ण अरब पर उन्हें प्रभुत्व तथा अधिकार प्रदान किया।

[2]आदरणीय उमर (رضي الله عنه) ने जब मुहाजिरों तथा अन्सार का भत्ता निर्धारित किया तो प्रत्येक मुहाजिर को भत्ता देते समय कहा "هذا ما وعدك الله في الدنيا" "यह वह है जिसका अल्लाह ने दुनिया में वचन दिया है।" "وما ادخرلك في الآخرة أفضل" "तथा परलोक में तेरे लिए जो भण्डार है, वह इससे कहीं श्रेष्ठ है।" (इब्ने कसीर)

[3] أهل الذكر से तात्पर्य अहले किताब हैं, जो पिछले नबियों तथा उनके इतिहास से परिचित थे। अर्थ यह है कि हमने जितने भी रसूल भेजे वे मनुष्य ही थे, इसीलिए मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी यदि मनुष्य हैं, तो यह कोई नई बात नहीं कि तुम उनके मनुष्यत्व के कारण उनकी रिसालत को अस्वीकार कर दो। यदि संदेह हो तो तुम अहले किताब से पूछ लो कि पूर्व कालिक सभी नबी मनुष्य थे अथवा फ़रिश्ते, यदि वे फ़रिश्ते थे तो निःसंदेह अस्वीकार कर देना, यदि वे भी सभी मनुष्य थे तो फिर मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत का मात्र मनुष्य होने के कारण इंकार क्यों ?

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ۗ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٤﴾

(४४) निशानियों तथा किताबों के साथ। यह स्मृति (पुस्तक) हमने आपकी ओर उतारी है कि लोगों की ओर जो उतारा गया है आप उसे स्पष्टरूप से वर्णन कर दें। शायद कि वे सोच विचार करें।

اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٤٥﴾

(४५) बुरा छल-कपट करने वाले क्या इस बात से निर्भय हो गये हैं कि अल्लाह (तआला) उन्हें धरती में धंसा दे अथवा उनके पास ऐसे स्थान से प्रकोप आ जाये, जहाँ का उन्हें संदेह एवं विचार भी न हो।

اَوْ يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٤٦﴾

(४६) अथवा उनको चलते-फिरते पकड़ ले,[1] यह किसी प्रकार से भी अल्लाह (तआला) को विवश नहीं कर सकते।

اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ ۭ فَاِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤٧﴾

(४७) अथवा उन्हें डरा-धमका कर पकड़ ले।[2] फिर निःसंदेह तुम्हारा प्रभु अत्यन्त करूणाकारी तथा अत्यन्त कृपालु है।[3]

---

[1]इसके विभिन्न भावार्थ हो सकते हैं। जैसे १- जब तुम व्यापार तथा व्यवसाय के लिए यात्रा पर जाओ, २- जब तुम व्यवसाय की उन्नति के लिए विभिन्न साधन तथा रीति अपनाओ ३- अथवा, रात्रि को विश्राम करने के लिए बिस्तर पर जाओ। यह تقلب के विभिन्न भावार्थ हैं। अल्लाह तआला जब चाहे इन अवस्थाओं में भी तुम्हारी पकड़ कर सकता है।

[2] تخوف का यह अर्थ भी हो सकता है कि पूर्व से ही हृदय में यातना तथा पकड़ का भय हो। जिस प्रकार कई बार मनुष्य कोई महापाप कर बैठता है, तो भय का आभास करता है कि कहीं अल्लाह मेरी पकड़ न कर ले, अतः कई बार इस प्रकार भी पकड़ होती है।

[3]कि वह पापों पर तुरन्त पकड़ नहीं करता, बल्कि अवसर प्रदान करता है तथा उस अवसर से अधिकतर लोगों को तो क्षमा-याचना तथा विनती का सौभाग्य भी प्राप्त हो जाता है।

(४८) क्या उन्होंने अल्लाह की सृष्टि में से किसी को भी नहीं देखा कि उसकी छाया दायें-बायें झुक-झुक कर अल्लाह (तआला) के समक्ष दण्डवत (सजदा) करती हैं तथा विवशता का प्रदर्शन करती हैं।[1]

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِّلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ﴿٤٨﴾

(४९) तथा निःसंदेह आकाशों तथा धरती के सभी जीवधारी तथा सभी फ़रिश्ते अल्लाह (तआला) के समक्ष दण्डवत (सजदा) करते हैं तथा तनिक भी गर्व नहीं करते।

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِن دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٩﴾

(५०) तथा अपने प्रभु से जो उनके ऊपर है भयभीत (कम्पित) रहते है[2] तथा जो आदेश मिल जाये उसके पालन करने में लगे रहते हैं।[3]

يَخَافُونَ رَبَّهُم مِّن فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٥٠﴾ ۩

(५१) तथा अल्लाह (तआला) कह चुका है कि दो पूज्य न बनाओ। पूज्य तो वही मात्र अकेला है।[4] बस तुम सब केवल मेरा ही डर रखो।

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۖ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿٥١﴾

---

[1]अल्लाह तआला की महिमा तथा महानता एवं उसकी गरिमा की महिमा का वर्णन है कि प्रत्येक वस्तु उसके समक्ष दण्डवत (सजदा) में तथा अधीन है, निर्जीव हों अथवा जीवधारी अथवा जिन्न एवं मनुषय तथा फ़रिश्ते प्रत्येक वस्तु जिसकी छाया दाहिने बायें झुकती है, तो वह सुबह शाम अपनी छाया के सहित अल्लाह को दण्डवत करती है। इमाम मुजाहिद फ़रमाते हैं कि जब सूर्य ढलता है, तो प्रत्येक वस्तु अल्लाह के समक्ष दण्डवत हो जाती है।

[2]अल्लाह के भय से कंपित तथा भयभीत रहती है।

[3]अल्लाह के आदेशों की अवहेलना नहीं करते, बल्कि जिसका आदेश दिया जाता है पालन करते हैं, जिससे मना किया जाता है, उससे दूर रहते हैं।

[4]क्योंकि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य है ही नहीं। यदि आकाश तथा धरती के दो अथवा अन्य ईष्टदेव होते तो संसार की यह सारी व्यवस्था स्थिर रह ही नहीं सकती थी, बिगाड़ तथा विनाश का शिकार हो चुकी होती। ﴿لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا﴾ (सूर: *अल-अंबिया*-२२) इसलिए ثنویت (दो उपास्यों) का विश्वास जिसके (अग्निपूजक) मानने

(५२) तथा आकाशों में तथा धरती में जो कुछ है, सब उसी का है तथा उसी की इबादत सदैव अनिवार्य है,[1] क्या फिर भी तुम उस के अतिरिक्त अन्यों से डरते हो ?

وَلَهُۥ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَلَهُ ٱلدِّينُ وَاصِبًا ۚ أَفَغَيْرَ ٱللَّهِ تَتَّقُونَ ﴿٥٢﴾

(५३) तथा तुम्हारे पास जितनी भी सामग्री हैं, सब उसी की प्रदान की हुई हैं,[2] अब भी जब तुम्हें कोई कठिनाई आ जाये, तो उसी की ओर प्रार्थना तथा विनती करते हो ।[3]

وَمَا بِكُم مِّن نِّعْمَةٍ فَمِنَ ٱللَّهِ ۖ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ ٱلضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْـَٔرُونَ ﴿٥٣﴾

(५४) तथा जहाँ उसने वह कठिनाई तुम से दूर कर दी, तुम में से कुछ लोग अपने प्रभु के साथ साझीदार बनाने लगते हैं ।

ثُمَّ إِذَا كَشَفَ ٱلضُّرَّ عَنكُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنكُم بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾

वाले रहे हैं अथवा تعدد إله (अनेकश्वरवादी) का विश्वास, जिसके अधिकतर मूर्तिपूजक मानने वाले रहे हैं यह सब असत्य हैं । जब सृष्टि का स्रष्टा एक है तथा वही बिना किसी की साझेदारी के सृष्टि को व्यवस्थित कर रहा है, तो पूज्य भी केवल वही है, जो अकेला है । दो अथवा दो से अधिक नहीं हैं ।

[1]उसी की उपासना (इबादत) तथा आज्ञापालन स्थाई तथा अनिवार्य है । واصبٌ का अर्थ 'सदैव' के हैं । "उनके लिए यातना है सदैव के लिए" (सूर: *अल-साफ़्फ़ात*-९) तथा इसका वही अर्थ है जो अन्य स्थान पर वर्णन किया गया है ।

﴿ فَٱعْبُدِ ٱللَّهَ مُخْلِصًا لَّهُ ٱلدِّينَ ۞ أَلَا لِلَّهِ ٱلدِّينُ ٱلْخَالِصُ ﴾

"तो अल्लाह की इबादत करो, उसी के लिए दीन को विशेष करते हुए, सावधान ! उसी के लिए विशेषरूप से भक्ति है ।" (सूर: *अल-ज़ुमर*-२,३)

[2]जब सभी सुख सुविधा अल्लाह ही देता है तो फिर उपासना (इबादत) अन्य की क्यों ?

[3]इसका अर्थ यह है कि अल्लाह के एक होने का विश्वास हृदय की गहराईयों में स्थित है, जो उस समय उभर कर सामने आ जाता है, जब प्रत्येक ओर से निराशा के बादल गहरे हो जाते हैं ।

(५५) कि हमारे प्रदान की हुई अनुकम्पाओं पर कृतघ्नता व्यक्त करें ।[1] (ठीक है) कुछ लाभ उठा लो अन्त में तुम्हें ज्ञात हो ही जायेगा ।[2]

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾

(५६) तथा जिसे जानते बूझते भी नहीं, उस का भाग हमारी प्रदान की हुई वस्तुओं में निर्धारित करते हैं ।[3] अल्लाह की सौगन्ध ! तुम्हारे इस आक्षेप का प्रश्न तुमसे अवश्य ही किया जायेगा ।[4]

وَيَجْعَلُونَ لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ ۗ تَاللَّهِ لَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنتُمْ تَفْتَرُونَ ﴿٥٦﴾

---

[1]परन्तु मनुष्य भी कितना कृतघ्न है कि कष्ट (रोग, दरिद्रता तथा हानि आदि) के दूर होते ही, वह पुन: प्रभु के साथ शिर्क करने लगता है ।

[2]यह उसी प्रकार ही है जैसे इससे पूर्व फ़रमाया था ।

﴿قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ﴾

"क्षणिक जीवन में लाभ उठा लो, अन्ततः तुम्हारा ठिकाना नरक है ।" (सूरः *इब्राहीम*-३०)

[3]अर्थात जिनको ये हितकारक संकटहारी तथा पूज्य समझते हैं वे पत्थर की मूर्तियाँ हैं, जिनकी वास्तविकता का उन्हें ज्ञान ही नहीं । उसी प्रकार कब्रों के गड़े हुए लोगों की वास्तविकता भी कोई नहीं जानता कि उनके साथ वहाँ क्या घटित हो रहा है ? वे अल्लाह के प्रिय की सूची में हैं अथवा किसी अन्य में ? इन बातों को कोई नहीं जानता परन्तु इन अत्याचारी लोगों ने उनकी वास्तविकता से अनभिज्ञ होते हुए भी, उन्हें अल्लाह का साझीदार बना रखा है । तथा अल्लाह के दिये हुए माल में से उनके लिए भी (भोग-प्रसाद के रूप में) भाग निर्धारित करते हैं, बल्कि अल्लाह का भाग रह जाये तो कोई चिन्ता नहीं, उनके भाग में कमी नहीं करते । जैसाकि सूरः *अल अनआम*-१३६ में वर्णन किया गया है ।

[4]तुम जो अल्लाह पर झूठ गढ़ते हो कि उसका साझी अथवा उसके कई साझीदार हैं, उसके विषय में क़ियामत के दिन तुम से पूछा जायेगा ।

(५७) तथा वह पवित्र अल्लाह (तआला) के लिए लड़कियाँ निर्धारित करते हैं तथा अपने लिए वह जो अपनी इच्छानुसार हो।[1]

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَنَٰتِ سُبْحَٰنَهُۥ ۙ وَلَهُم مَّا يَشْتَهُونَ ﴿٥٧﴾

(५८) तथा उनमें से जब किसी को लड़की होने की सूचना दी जाये तो उसका मुख काला हो जाता है तथा दिल ही दिल में घुटने लगता है।

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِالْأُنثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُۥ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٥٨﴾

(५९) इस बुरी सूचना के कारण लोगों से छिपा-छिपा फिरता है। सोचता है क्या इस अपमान को लिये ही रहे अथवा इसे मिट्टी में दबा दे। आह ! क्या ही बुरे निर्णय करते हैं ?[2]

يَتَوَٰرَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِن سُوٓءِ مَا بُشِّرَ بِهِۦٓ ۚ أَيُمْسِكُهُۥ عَلَىٰ هُونٍ أَمْ يَدُسُّهُۥ فِى التُّرَابِ ۗ أَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٥٩﴾

---

[1]अरब के कुछ कबीले (खुजाआ तथा किनाना) फ़रिश्तों की पूजा करते थे तथा कहते थे कि ये अल्लाह की पुत्रियाँ हैं, अर्थात एक अत्याचार तो यह किया कि अल्लाह की संतान बनायी, जबकि उसकी कोई संतान नहीं। फिर संतान भी स्त्रीलिंग, जिसे वे अपने लिए अप्रिय समझते अल्लाह के लिए वह पसन्द किया। जैसाकि अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنثَىٰ * تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ ضِيزَىٰ﴾

"क्या तुम्हारे लिए पुत्र तथा उसके लिए पुत्रियाँ ? यह तो बड़ा भद्दा बटवारा है।" (*सूर: अल-नज्म-२१,२२*)

यहाँ यह कहा कि तुम तो यह कामना करते हो कि पुत्र हों कोई पुत्री न हो।

[2]अर्थात पुत्री का जन्म सुनकर उनकी यह दशा होती है जो वर्णित हुई, तथा अल्लाह के लिए पुत्रियाँ चयन करते हैं। कैसा अनुचित निर्णय है ? यहाँ यह न समझा जाये कि अल्लाह तआला भी लड़कों की अपेक्षा लड़कियों को तुच्छ समझता है। नहीं, अल्लाह के समक्ष लड़का-लड़की में कोई अन्तर नहीं। न लिंग के आधार पर किसी की हीनता तथा श्रेष्ठता का विचार उसके यहाँ है। यहाँ तो केवल अरबों के इस अन्याय तथा पूर्णरूप से अनुचित व्यवहार का स्पष्टीकरण उद्देश्य है, जो उन्होंने अल्लाह के साथ किया है। जबकि अल्लाह की महिमा तथा श्रेष्ठता को वे भी स्वीकार करते थे। जिसका तर्कपूर्ण परिणाम यह था कि जो वस्तु ये अपने लिए प्रिय नहीं रखते, अल्लाह के लिए भी वह निर्धारित न करते, परन्तु उन्होंने इसके विपरीत किया। यहाँ केवल उसी अन्याय का स्पष्टीकरण किया गया है।

لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

(६०) परलोक (आख़िरत) पर ईमान न रखने वालों का ही बुरा उदाहरण है,[1] अल्लाह के लिए तो अति उच्च महिमा है, वह बड़ा प्रभावशाली तथा विवेकी है ।[2]

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَاۗبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَاۗءَ اَجَلُهُمْ

(६१) तथा यदि लोगों के पाप पर अल्लाह उनकी पकड़ करता, तो धरती पर एक भी जीव न बचता,[3] परन्तु वह तो उन्हें एक निर्धारित समय तक ढील देता है,[4] फिर जब उनका

---

[1]अर्थात काफ़िरों के जो घोर कुकर्म वर्णन किये गये हैं उन्हीं के लिए बुरा उदाहरण अथवा दुर्गुण है अर्थात अज्ञान तथा कुफ्र का दुर्गुण । अथवा यह अर्थ है कि अल्लाह की पत्नी तथा संतान जो ये निर्धारित करते हैं, यह बुरा उदाहरण है, जो आख़िरत को नकारने वाले अल्लाह के लिए वर्णन करते हैं ।

[2]अर्थात उसका प्रत्येक गुण सृष्टि की तुलना में श्रेष्ठतम तथा महान है । जैसे उसका ज्ञान विस्तृत है, उसका सामर्थ्य असीम है, उसकी दया तथा प्रदान अनुपम है । अथवा यह अर्थ है कि वह सामर्थ्यवान है, स्रष्टा है, जीविका प्रदान करने वाला है तथा देखने सुनने वाला है आदि (फ़तहुल क़दीर) । अथवा बुरा उदाहरण का अर्थ कमी, आलस्य है तथा مثل أعلى का अर्थ पूर्ण सामर्थ्य, प्रत्येक रूप से अल्लाह के लिए है । (इब्ने कसीर) و على هـــذا القيـــاس.

[3]यह उसका धैर्य है तथा उसके विवेक एवं ज्ञान का परिणाम है कि वह अपनी अवहेलना देखता है परन्तु फिर भी वह अपनी जीविका प्रदान करना न रोकता है तथा न तुरन्त पकड़ करता है । यदि वह कुकर्म करने के साथ ही पकड़ करना प्रारम्भ कर दे तो अत्याचार, पाप तथा कुफ्र एवं शिर्क इतने अधिक हैं कि धरती पर कोई जीवधारी शेष न रहे, क्योंकि जब बुराई चारों ओर फैल जाये तो फिर प्रकोप भी चारों ओर होगा जिससे सत्कर्मी भी नाश कर दिये जाते हैं । परन्तु परलोक में अल्लाह की ओर से वे (सत्कर्मी) सम्मानित होंगे, जैसाकि हदीस में स्पष्टीकरण आता है । (देखिये सहीह बुख़ारी संख्या २११८ तथा मुस्लिम संख्या २२०६ तथा २२१०)

[4]यह उस विवेक का वर्णन है जिसकें अधीन वह एक निर्धारित समय तक अवसर देता है ताकि उनके लिए कोई तर्क शेष न रहे । दूसरे, उनकी संतानों में से कुछ ईमानदार निकल आयें ।

لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٦١﴾

वह समय आ जाता है, तो वह एक क्षण पीछे नहीं रह सकते तथा न आगे बढ़ सकते हैं।

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَصِفُ أَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ أَنَّ لَهُمُ الْحُسْنَىٰ ۖ لَا جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَأَنَّهُم مُّفْرَطُونَ ﴿٦٢﴾

(६२) तथा वह अपने लिए जो अप्रिय समझते हैं, उसे अल्लाह के लिए सिद्ध करते हैं,[1] तथा उनकी जीभें असत्य बातों का वर्णन करती हैं कि उनके लिए श्रेष्ठता है।[2] (नहीं-नहीं) वास्तव में उनके लिए अग्नि है तथा ये नरकवासियों के अग्रणी हैं।[3]

تَاللَّهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ

(६३) अल्लाह की सौगन्ध ! हमने तुझसे पूर्व के समुदायों की ओर भी (अपने रसूल) भेजे परन्तु शैतान ने उनके कुकर्मों को उनकी दृष्टि में उचित ठहराया,[4] वह शैतान आज भी

---

[1]अर्थात पुत्रियाँ, यह पुनरावृत्ति विशेष बल के लिए है।

[2]यह उनके दूसरे दुर्गुण का वर्णन है कि वे अल्लाह के साथ अन्याय का मामला करते हैं, परन्तु उनके मुख ये झूठ बोलते हैं कि उनका अन्त अच्छा है, उनके लिए भलाईयाँ हैं तथा दुनिया - की भाँति उनकी आख़िरत भी अच्छी होगी। जब कि ऐसा नहीं, न यह सम्भव ही है।

[3]अर्थात नि:संदेह उनका अन्त अच्छा नहीं है तथा वह है नरक की अग्नि। जिसमें वे नरक में जाने वालों का नेतृत्व करेंगे। فرط का यही अर्थ हदीस से भी सिद्ध है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : «أَنَا فَرَطُكُمْ عَلَى الْحَوْضِ» (सहीह बुख़ारी संख्या ६५८४ तथा मुस्लिम संख्या १७९३) "मैं हौज़े कौसर पर तुम्हारा नेतृत्व करूँगा।" एक अन्य अर्थ مُفرطون का यह किया गया है कि उन्हें नरक में डालकर भूला दिया जायेगा।

[4]जिसके कारण उन्होंने भी रसूलों को झुठलाया जिस प्रकार हे पैग़म्बर मक्का के क़ुरैश तुझे झुठला रहे हैं।

उनका मित्र बना हुआ है ।[1] तथा उनके लिए दुखदायी यातना है ।

وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾

(६४) इस किताब को हमने आप पर इसलिए उतारा है कि आप हर उस बात को व्यक्त कर दें जिसमें वे मतभेद कर रहे हैं ।[2] और यह ईमानवालों के लिए मार्गदर्शन तथा कृपा है ।

وَمَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي اخْتَلَفُوا فِيهِ ۙ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٦٤﴾

(६५) तथा अल्लाह (तआला) आकाशों से वर्षा करके उससे धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवित कर देता है । निःसंदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं, जो सुनें ।

وَاللَّهُ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٥﴾

(६६) तथा तुम्हारे लिए तो[3] पशुओं में भी बड़ी शिक्षा है कि हम तुम्हें उसके पेट में जो कुछ है, उसी में से गोबर तथा रक्त के मध्य से शुद्ध दूध पिलाते हैं, जो पीने वालों के लिए सहजता से पचता है ।[4]

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۖ نُّسْقِيكُم مِّمَّا فِي بُطُونِهِ مِن بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِّلشَّارِبِينَ ﴿٦٦﴾

---

[1] اليوم से तात्पर्य सांसारिक समय है जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है, अथवा इससे तात्पर्य आख़िरत है कि वहाँ भी यह इनका साथी होगा । अथवा وليهم में هم का संकेत मक्का के काफ़िरों की ओर है । अथवा यही शैतान जिसने पिछले समुदायों को भटकाया, आज वह इन मक्का के काफ़िरों का मित्र है तथा उन्हें रिसालत को झुठलाने के लिए बाध्य कर रहा है ।

[2] इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह पदवी वर्णन की जा रही है कि आस्था तथा धार्मिक नियमों के सम्बन्ध में यहूदी तथा इसाई के मध्य, उसी प्रकार अंधविश्वासियों तथा मूर्तिपूजकों के मध्य तथा अन्य धर्मों के अनुयायियों के मध्य जो आपसी मतभेद हैं, उनका विस्तृत वर्णन इस प्रकार करें कि सत्य तथा असत्य स्पष्ट हो जाये ताकि लोग सत्य को अपना कर असत्य से बचें ।

[3] أنعام (चौपाये, पशु) से ऊँट, गाय, बकरी (तथा भेड़ एवं दुम्बा) तात्पर्य हैं ।

[4] यह चौपाये जो कुछ खाते हैं, आमाशय में जाता है, उसी भोजन से दूध, रक्त, गोबर तथा मूत्र बनता है । रक्त नसों में तथा दूध थनों में, उसी प्रकार गोबर तथा मूत्र अपने

(६७) तथा खजूर एवं अंगूर के वृक्षों के फलों से तुम मदिरा बना लेते हो तथा उत्तम जीविका सामग्री भी। जो लोग बुद्धि रखते हैं, उनके लिए तो इसमें भी बहुत बड़ी निशानी है।

وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝

(६८) तथा आपके प्रभु ने मधुमक्खी को यह समझ दिया [1] कि पर्वतों में, वृक्षों में तथा लोगों की बनायी हुई ऊँची-ऊँची टट्टियों में अपने घर (छत्ते) बना।

وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ۝

(६९) तथा हर प्रकार के फल खा, तथा अपने (पालनहार) के सरल मार्गों पर चलती फिरती रह, उनके पेट से (पीने वाला पदार्थ) पेयद्रव निकलता है,[2] जिसके रंग भिन्न हैं[3] तथा जिसमें लोगों के लिए स्वास्थ्यवर्धक है,[4]

ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ۭ يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَاۗءٌ

अपने निकास स्थान में स्थानान्तरित हो जाता है तथा दूध में न तो रक्त का रंग होता है तथा न गोबर एवं मूत्र की दुर्गन्ध। सफेद, स्वच्छ दूध बाहर आता है, जो अत्यन्त सरलता से गले के नीचे उतर जाता है।

[1]प्रकाशना (वह्यी) से तात्पर्य वह बोध तथा वह समझ-बूझ है, जो अल्लाह तआला ने अपनी स्वाभाविक आवश्यकता की पूर्ति के लिए जीवों को प्रदान की है।

[2]मधुमक्खी प्रथम पर्वतों पर, वृक्षों पर, तथा ऊँचे भवनों में अपना छत्ता इस प्रकार बनाती है कि उसमें कोई छिद्र अथवा दरार नहीं रहता। फिर वह बाग़ों, वनों घाटियों एवं पर्वतों में घूमती फिरती है तथा हर प्रकार के फलों का रस अपने पेट में एकत्रित करती है तथा फिर उन्हीं मार्गों से जहाँ से गुज़रती है वापस लौटती है तथा अपने छत्ते में आकर बैठ जाती है, जहाँ उसके मुख से मधु निकलता है, जिसे क़ुरआन ने पेय द्रव कहा है अर्थात स्वास्थ्यवर्धक पेय द्रव।

[3]कोई लाल, कोई सफेद, कोई नीला तथा कोई बंसती रंग का। जिस प्रकार फलों तथा खेतों से वह भोजन प्राप्त करती हैं, उसी प्रकार उसका रंग तथा स्वाद भी भिन्न होता है।

[4] شفاء जाति वाचक संज्ञा महत्व दिखाने के लिए है अर्थात बहुत से रोगों के लिए मधु स्वास्थ्यवर्धक है। यह नहीं कि प्रत्येक रोग का इलाज है। वैद्यों तथा चिकित्सकों ने भी

لِلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝٦٩

चिन्तन तथा विचार करने वालों के लिए इसमें भी बहुत बड़ी निशानी (लक्षण) है।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ۟ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝٧٠

(७०) तथा अल्लाह (तआला) ने ही तुम सबको जन्म दिया है, वही फिर तुम्हें मृत्यु देगा, तथा तुममें ऐसे भी हैं जो बहुत बुरी आयु की ओर लौटाये जाते हैं कि बहुत कुछ जानने के पश्चात भी न जानें।[1] निःसंदेह अल्लाह (तआला) जानने वाला तथा सामर्थ्यवान है।

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا

(७१) तथा अल्लाह (तआला) ने ही तुम में से एक को दूसरे पर जीविका में अधिकता प्रदान कर रखी है, परन्तु जिन्हें अधिक प्रदान किया

मधु को स्वास्थवर्धक प्राकृतिक द्रव के रूप में माना है। परन्तु विशेष रोगों के लिए न कि प्रत्येक रोग के लिए। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिष्ठान एवं मधु रूचिकर थे (सहीह बुख़ारी किताबुल अशरिब: बाबु शराबिल हलवाए वल असले) एक अन्य कथन में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तीन वस्तुओं में स्वास्थ है सिंघी लगवाने में, मधु के पीने में तथा आग से दागने में। परन्तु मैं अपने अनुयायियों को आग से दागने से मना करता हूँ। (सहीह बुख़ारी बाबुद दवाए बिल असले)। हदीस में एक घटना का वर्णन मिलता है। उदरामय (दस्त) के रोग में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मधु प्रयोग करने की सलाह दी जिससे उदरामय बढ़ गया, आकर बतलाया गया, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पुनः मधु पीने की सलाह दी जिससे और अधिक उदरामय आने लगा तथा घर वालों ने समझा कि शायद रोग बढ़ गया है। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीसरी बार भी फ़रमाया अल्लाह सच्चा है तथा तेरे भाई का पेट झूठा है। जा, तथा उसको मधु पिला। अतः तीसरी बार में वह पूर्ण स्वस्थ हो गया। (सहीह बुख़ारी बाबु दवाइल मबतून तथा सहीह मुस्लिम किताबुस सलाम)

[1]जब मनुष्य प्राकृतिक आयु से बढ़ जाता है, तो फिर उसकी बुद्धि भी कमज़ोर हो जाती है तथा कई बार बुद्धि समाप्त हो जाती है तथा वह बच्चे के समान हो जाता है। यही वृद्धावस्था है जिससे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शरण माँगी है।

بِرَآدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ؕ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾

गया है, वह अपनी जीविका को अपने अधीन दास को नहीं देते कि वह और ये उसमें समान हो जायें,[1] तो क्या ये लोग अल्लाह के उपकारों को अस्वीकार कर रहे हैं ?[2]

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٢﴾

(७२) तथा अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए तुममें से ही तुम्हारी पत्नियाँ पैदा कीं तथा तुम्हारी पत्नियों से तुम्हारे पुत्र तथा पौत्र पैदा किये तथा तुम्हें अच्छी-अच्छी वस्तुऐं खाने के लिए प्रदान कीं । तो क्या फिर भी लोग असत्य पर ईमान लायेंगे ? [3] तथा अल्लाह तआला के उपहारों की कृतघ्नता करेंगे ?

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْئًا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٧٣﴾

(७३) तथा वे अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त उनकी पूजा करते हैं, जो आकाशों तथा धरती से उन्हें कुछ भी तो जीवन साधन नहीं दे सकते तथा न कुछ शक्ति रखते हैं ।[4]

---

[1]अर्थात जब तुम अपने दासों को इतना धन तथा सांसारिक सुख साधन नहीं देते कि वे तुम्हारे समान हो जायें तो अल्लाह तआला कब प्रिय समझेगा कि तुम कुछ लोगों को, जो अल्लाह के भक्त तथा दास हैं अल्लाह के साझीदार तथा समान बना दो ।

[2]कि अल्लाह के दिये हुए धन में से अन्य देवताओं का भोग-प्रसाद निकालते हो तथा इस प्रकार उसकी अनुकम्पा की कृतघ्नता करते हो ।

[3]अर्थात अल्लाह तआला अपने इन उपहारों का वर्णन करके जो आयत में वर्णित हैं, प्रश्न कर रहा है कि सब कुछ देने वाला तो अल्लाह है, परन्तु ये उसे छोड़कर अन्यों की पूजा करते हैं तथा अन्यों का कहना मानते हैं ।

[4]अर्थात अल्लाह को छोड़कर पूजा भी ऐसे लोगों की करते हैं जिनके पास किसी बात का अधिकार नहीं है ।

(७४) तो अल्लाह (तआला) के लिए समतुल्य न बनाओ,[1] अल्लाह (तआला) भलीभाँति जानता है तथा तुम नहीं जानते ।

فَلَا تَضۡرِبُوا لِلّٰهِ الۡاَمۡثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعۡلَمُ وَاَنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۝

(७५) अल्लाह (तआला) एक उदाहरण का वर्णन कर रहा है कि एक दास है अन्य के स्वामित्व का, जो किसी बात का अधिकार नहीं रखता तथा एक अन्य व्यक्ति है जिसे हमने अपने पास से समुचित धन दे रखा है, जिसमें से वह छुपे तथा खुले रूप से ख़र्च करता है। क्या ये सब समान हो सकते हैं ? [2] अल्लाह (तआला)

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبۡدًا مَّمۡلُوۡكًا لَّا يَقۡدِرُ عَلٰى شَىۡءٍ وَّمَنۡ رَّزَقۡنٰهُ مِنَّا رِزۡقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنۡفِقُ مِنۡهُ سِرًّا وَّجَهۡرًا ؕ هَلۡ يَسۡتَوٗنَ ؕ اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ ؕ بَلۡ اَكۡثَرُهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ۝

---

[1]जिस प्रकार से मुशरेकीन उदाहरण देते हैं कि जिस प्रकार राजा से मिलना हो अथवा उससे कोई काम हो तो कोई सीधे राजा से नहीं सम्पर्क स्थापित कर सकता, उसे सर्वप्रथम राजा के निकटवर्ती से सम्बन्ध स्थापित करना पड़ता है। तब जाकर कहीं उसका राजा से सम्पर्क होता है। उसी प्रकार अल्लाह का मान तथा महिमा अपरमपार है। उस तक पहुँचने के लिए हम इन देवताओं को साधन बनाते हैं अथवा महात्मा का माध्यम पकड़ते हैं। अल्लाह (तआला) ने फ़रमाया कि तुम अल्लाह को अपने जैसा न समझो न इस प्रकार के उदाहरण दो। इसलिए कि वह तो एक है उसकी कोई उपमा ही नहीं है। फिर राजा न छिपी बातों को जानता है न अर्न्तयामी, न सब कुछ देखने वाला तथा न भली प्रकार सुनने वाला कि वह बिना किसी साधन के जनता की दशा तथा आवश्यकताओं को जान जाये। जबकि अल्लाह तआला प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष, स्पष्ट-अस्पष्ट, दर्शी-अदर्शी हर प्रकार की वस्तु का ज्ञान रखने वाला है तथा प्रत्येक की विनती सुनने का सामर्थ्य रखता है। भला एक मनुष्य राजा की अल्लाह के साथ क्या तुलना तथा उदाहरण ?

[2]कुछ विद्वान कहते हैं कि यह दास तथा स्वतन्त्र का उदाहरण है कि प्रथम व्यक्ति दास तथा द्वितीय स्वतन्त्र है। ये दोनों समान नहीं हो सकते। कुछ कहते हैं कि यह ईमान वालों तथा काफ़िरों की तुलना है। प्रथम काफ़िर तथा द्वितीय ईमान वाला है। ये समान नहीं। कुछ कहते हैं कि यह अल्लाह तआला तथा झूठे देवताओं की तुलना है। प्रथम से तात्पर्य झूठे देवता तथा द्वितीय से अल्लाह है। ये दोनों समान नहीं हो सकते। अर्थ यही है कि एक दास तथा स्वतन्त्र, इसके उपरान्त कि दोनों मनुष्य हैं, दोनों अल्लाह की सृष्टि हैं तथा अन्य भी बहुत-सी बातें दोनों के मध्य समान हैं इसके उपरान्त मान, सम्मान मर्यादा तथा आदर में दोनों को समान नहीं समझते। तो

ही के लिए सारी प्रशंसा है, बल्कि उनमें के अधिकतर नहीं जानते ।

(७६) तथा अल्लाह (तआला) एक अन्य उदाहरण वर्णन करता है[1] दो व्यक्तियों की जिन में से एक गूँगा है तथा किसी वस्तु पर अधिकार नहीं रखता, बल्कि वह अपने स्वामी पर बोझ है, कहीं भी उसे भेजे वह कोई भलाई नहीं लाता, क्या यह तथा वह जो न्याय का आदेश देता है[2] तथा है भी सीधे मार्ग पर, समान हो सकते हैं ?

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ۭ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

(७७) तथा आकाशों तथा धरती का परोक्ष केवल अल्लाह ही को ज्ञात है ।[3] तथा क़ियामत की बात तो ऐसी ही है, जैसे आँख का झपकना, बल्कि इससे भी अधिक निकट । निःसंदेह

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ

अल्लाह तआला तथा पत्थर की एक मूर्ति अथवा एक क़ब्र की ढेरी, ये दोनों किस प्रकार समान हो सकते हैं ?

[1]यह एक अन्य उदाहरण है जो पहले से अधिक स्पष्ट है ।

[2]तथा हर कार्य करने का सामर्थ्य रखता है क्योंकि हर बात बोलता तथा समझता है तथा है भी सीधे मार्ग पर अर्थात प्राकृतिक धर्म तथा सुचरित्र पर । अर्थात अधिकता एवं कमी से पवित्र । जिस प्रकार से ये दोनों समान नहीं, उसी प्रकार अल्लाह तआला तथा वे वस्तुएँ जिनको लोग अल्लाह का साझीदार ठहराते हैं, समान नहीं हो सकते ।

[3]अर्थात आकाश तथा धरती में जो वस्तुएँ अप्रत्यक्ष हैं तथा वे असंख्य हैं तथा उन्हीं में क़ियामत का ज्ञान है उनका ज्ञान अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं । इसलिए इबादत के योग्य एक अल्लाह है न कि वे मूर्तियाँ अथवा मृत धर्मात्मा व्यक्ति जिनको किसी वस्तु का ज्ञान नहीं न वे किसी को लाभ-हानि पहुँचाने का सामर्थ्य रखते हैं ।

شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝٧٧

अल्लाह (तआला) हर चीज़ पर सामर्थ्य रखने वाला है ।[1]

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٧٨

(७८) तथा अल्लाह (तआला) ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भ से निकाला है कि उस समय तुम कुछ भी नहीं जानते थे,[2] उसी ने तुम्हारे कान तथा आँखें तथा दिल बनाये[3] कि तुम कृतज्ञता व्यक्त कर सको ।[4]

---

[1]अर्थात उसके सामर्थ्य का प्रमाण है कि यह विस्तृत विशाल सृष्टि उसके आदेश से पलक झपकने में बल्कि उससे भी कम समय में प्रलय तथा समाप्त हो जायेगी । यह बात अतिश्योक्ति के रूप में नहीं बल्कि यह एक वास्तविक घटना है क्योंकि उसका सामर्थ्य असीम है जिसका हम अनुमान भी नहीं कर सकते, उसके एक शब्द कुन كن से वह सब कुछ हो जाता है जो वह चाहता है । तो यह क़ियामत भी उसके كن कुन कहने से हो जायेगी ।

[2] شيئا जाति वाचक है, तुम कुछ नहीं जानते थे, न शुभ-अशुभ को, न लाभ हानि को ।

[3]ताकि कानों द्वारा तुम स्वर सुनो, आँखों के द्वारा वस्तुओं को देखो तथा हृदय अर्थात बुद्धि (क्योंकि बुद्धि का केन्द्र हृदय है) दी, जिससे वस्तुओं के मध्य अन्तर कर सको तथा लाभ-हानि पहचान सको, ज्यों-ज्यों मनुष्य बड़ा होता जाता है, उसकी शक्ति तथा बुद्धि में वृद्धि होती जाती है यहाँ तक कि जब मनुष्य समझ तथा वयस्क आयु को पहुँचता है, तो उसकी क्षमता भी शक्तिशाली हो जाती है, यहाँ तक कि फिर पूर्णता की सीमा को पहुँच जाती है ।

[4]अर्थात यह क्षमता तथा शक्ति अल्लाह तआला ने इसलिए प्रदान की हैं कि मनुष्य इन अंगों-प्रत्यंगों को इस प्रकार प्रयोग करे कि जिससे अल्लाह तआला प्रसन्न हो जाये । उनसे अल्लाह की इबादत तथा आज्ञा पालन करे । यही अल्लाह के उन उपहारों की व्यवहारिक कृतज्ञता है । हदीस में आता है, मेरा भक्त जिन वस्तुओं के द्वारा मेरी निकटता प्राप्त करता है उनमें सबसे अधिक प्रिय वस्तुयें वह हैं जो मैंने उस पर अनिवार्य की हैं । इसके अतिरिक्त ऐच्छिक इबादत के द्वारा भी वह मेरी अधिक निकटता प्राप्त करने का प्रयत्न करता है यहाँ तक कि मैं उससे प्रेम करने लग जाता हूँ । तथा जब मैं उससे प्रेम करने लग जाता हूँ तो मैं उसका कान हो जाता हूँ जिससे वह सुनता है, आँख हो जाता हूँ जिससे वह देखता है, हाथ हो जाता हूँ जिससे वह पकड़ता है, पैर बन जाता हूँ जिससे वह चलता है तथा यदि वह मुझसे प्रश्न करता है तो मैं उसे प्रदान करता हूँ

أَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرَٰتٍ فِي جَوِّ السَّمَآءِ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَٰتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٧٩﴾

(७९) क्या उन लोगों ने पक्षियों को नहीं देखा जो आज्ञा के अधीन बँधे हुए आकाश में हैं, जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं थामे हुए है ।[1] नि:संदेह इसमें ईमान लाने वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं ।

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُم مِّنۢ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُم مِّن جُلُودِ الْأَنْعَٰمِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ أَصْوَافِهَا وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَآ أَثَٰثًا وَمَتَٰعًا إِلَىٰ حِينٍ ﴿٨٠﴾

(८०) तथा अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों में निवास स्थान बना दिया है, और उसी ने तुम्हारे लिये पशुओं की खालों के घर बना दिये हैं, जिन्हें तुम हल्का पाते होअपने प्रस्थान के दिन तथा अपने पड़ाव के दिन भी,[2] तथा उनके ऊन, रोयें तथा बालों से भी उसने बहुत-सी वस्तुएँ तथा एक निर्धारित समय तक के लिए लाभ की वस्तुएँ बना दीं ।[3]

तथा मुझसे किसी वस्तु से मुक्ति चाहता है तो मैं उसे शरण देता हूँ । (सहीह बुख़ारी किताबुर रिक़ाक़ बाबुत तवाज़ुअ) इस हदीस का ग़लत भाव लेकर कुछ लोग महात्माओं को अल्लाह की शक्ति धारणकर्त्ता बना देते हैं । यद्यपि कि हदीस का स्पष्ट अर्थ यह है कि जब भक्त अपनी इबादत तथा आज्ञा पालन को शुद्ध रूप से अल्लाह ही के लिए कर लेता है,तो उसका प्रत्येक कार्य अल्लाह की प्रसन्नता के लिए होता है, अपने कानों से वही बात सुनता है तथा अपनी आँखों से वही वस्तु देखता है जिसकी अल्लाह ने आज्ञा प्रदान की है, जिस वस्तु को हाथ से पकड़ता है तथा पैरों से चलकर उस ओर जाता है, तो वह वही वस्तु होती है जिसको धार्मिक नियमों ने मान्यता दी हो । वह उनको अल्लाह की अवज्ञा के लिए प्रयोग नहीं करता केवल आज्ञा पालन में प्रयोग करता है ।

[1]यह अल्लाह तआला ही है जिसने पक्षियों को इस प्रकार उड़ने की तथा हवाओं को उन्हें अपने ऊपर उठाये रखने की शक्ति प्रदान की ।

[2]अर्थात चमड़े के खेमें जिन्हें तुम यात्राओं में सरलतापूर्वक उठाये फिरते हो, तथा जहाँ आवश्यक पड़ती है तान कर ऋतु की तीब्रता से अपने को सुरक्षित कर लेते हो ।

[3] أصواف बहुवचन है صوفٌ का । भेड़ का ऊन । أوبار बहुवचन है وبرٌ का, ऊँट के बाल, أشعار बहुवचन है شَعَرٌ का, भेड़ तथा बकरी के बाल । इनसे नाना प्रकार की वस्तुएँ

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾

(८१) तथा अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई वस्तुओं में से छाया बनायी है।[1] तथा उसी ने तुम्हारे लिए पर्वतों में गुफ़ा बनायी हैं तथा उसी ने तुम्हारे लिए वस्त्र बनाये हैं जो तुम्हें गर्मी से सुरक्षित रखें तथा ऐसे कवच भी जो तुम्हें युद्ध के समय काम आयें।[2] वह इसी प्रकार अपने पूरे-पूरे उपहार प्रदान कर रहा है कि तुम आज्ञा पालक बन जाओ।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٢﴾

(८२) फिर भी यदि ये मुख मोड़े रहें, तो आप पर केवल स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है।

يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٣﴾

(८३) ये अल्लाह के उपहार जानते-पहचानते हुए भी उनको नकार रहे हैं, बल्कि उनमें से अधिकतर कृतघ्न हैं।[3]

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ

(८४) तथा जिस दिन हम हर समुदाय में से गवाह खड़ा करेंगे फिर काफ़िरों को न तो

बनती हैं, जिनसे मनुष्य को धन अर्जित होता है तथा उनसे एक समय तक लाभ भी उठाया जाता है।

[1]अर्थात वृक्ष जिनसे छाया प्राप्त करते हो।

[2]अर्थात ऊन तथा रूई के कुर्ते-कमीज़ तथा अन्य वस्त्र जो सामान्यत: पहनने में आते हैं तथा लोहे की कवच तथा मुकुट जो युद्ध में पहना जाता है।

[3]अर्थात इस बात को जानते तथा समझते हैं कि ये सारी सुख-सुविधायें उत्पन्न करने वाला तथा उनका प्रयोग में लाने की क्षमता प्रदान करने वाला केवल अल्लाह तआला ही है, फिर भी अल्लाह को नहीं मानते तथा अधिकतर कृतघ्न होते हैं। अर्थात अल्लाह को छोड़कर अन्यों की पूजा करते हैं।

يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٨٤﴾

आज्ञा दी जायेगी तथा न क्षमा-याचना करने को कहा जायेगा ।[1]

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٨٥﴾

(८५) तथा जब ये अत्याचारी लोग यातना देख लेंगे, फिर न तो उनसे हल्की की जायेगी तथा न वे ढील दिये जायेंगे ।[2]

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ شُرَكَاؤُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُوا مِن دُونِكَ ۖ فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٨٦﴾

(८६) तथा जब मिश्रणवादी अपने भागीदारों को देख लेंगे, तो कहेंगे कि हे हमारे प्रभु ! यही हमारे साझीदार हैं, जिन्हें हम तुझे छोड़कर पुकारा करते थे। फिर वे उनको उत्तर देंगे कि तुम पूरे ही झूठे हो ।[3]

---

[1]अर्थात प्रत्येक अनुयायियों के गुट पर उस अनुयायी गुट का पैग़म्बर गवाही देगा कि उन्हें अल्लाह का संदेश पहुँचा दिया गया था। परन्तु उन्होंने उसकी चिन्ता नहीं की। इन काफ़िरों को कारण बताने का समय भी नहीं दिया जायेगा, क्योंकि वास्तव में उनके पास कोई कारण अथवा तर्क होगा ही नहीं। न उनसे पलटने तथा यातना दूर करने की माँग की जायेगी। क्योंकि इसकी आवश्यकता उस समय आती है जब किसी को अवसर देने का विकल्प हो। لا يُستَعتبون के एक अन्य अर्थ यह किये गये हैं कि उन्हें अपने प्रभु को प्रसन्न करने का अवसर नहीं प्रदान किया जायेगा क्योंकि वह समय उनको संसार में दिया जा चुका है जो कर्मशाला है। परलोक तो कर्मशाला नहीं, वह तो प्रतिकार का घर है, वहाँ तो उस चीज़ का बदला मिलेगा, जो मनुष्य संसार से करके गया होगा, वहाँ कुछ करने का अवसर किसी को नहीं मिलेगा।

[2]हल्का न करने का अर्थ, मध्य में कोई विराम नहीं होगा, यातना निरन्तर बिना किसी प्रकार के विलम्ब के होगी। तथा न ढील ही दी जायेगी अर्थात उन्हें तुरन्त कसकर पकड़ लिया जायेगा तथा जंजीरों से जकड़कर नरक में फेंक दिया जायेगा अथवा क्षमा माँगने का अवसर भी प्रदान नहीं किया जायेगा। क्योंकि परलोक कर्मस्थली नहीं बदला प्राप्त करने का स्थान है।

[3]झूठे देवताओं की पूजा करने वाले अपने दावे में झूठे तो नहीं होंगे परन्तु वे देवी-देवता जिनको ये अल्लाह का साझीदार बताते थे, कहेंगे ये झूठे हैं। यह या तो साझीदारी को नकारना है अर्थात हमें अल्लाह तआला का साझीदार बनाने में ये झूठे हैं, भला अल्लाह का साझीदार कौन हो सकता है ? अथवा इसलिए उन्हें झूठा बतायेंगे कि

(८७) तथा उस दिन वे सब (विवश होकर) अल्लाह. के सामने आज्ञाकारी होना स्वीकार करेंगे तथा जो आक्षेप लगाया करते थे, वह सब उनसे खो जायेंगे।

وَ اَلۡقَوۡا اِلَى اللّٰهِ يَوۡمَئِذِ ۨالسَّلَمَ وَضَلَّ عَنۡهُمۡ مَّا كَانُوۡا يَفۡتَرُوۡنَ ﴿۸۷﴾

(८८) जिन्होनें अधर्म (कुफ़्र) किया तथा अल्लाह के मार्ग से रोका हम उन्हें प्रकोप पर प्रकोप बढ़ाते जायेंगे, [1] यह प्रतिकार होगा उनके उपद्रव उत्पन्न करने का।

اَلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَصَدُّوۡا عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ زِدۡنٰهُمۡ عَذَابًا فَوۡقَ الۡعَذَابِ بِمَا كَانُوۡا يُفۡسِدُوۡنَ ﴿۸۸﴾

वे उनकी पूजा से कदापि अनभिज्ञ थे। जिस प्रकार क़ुरआन करीम ने विभिन्न स्थानों पर इस बात का वर्णन किया है।

﴿ فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِن كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَافِلِينَ ﴾

"हमारे तथा तुम्हारे मध्य अल्लाह ही पर्याप्त गवाह है कि हम इस बात से अनभिज्ञ थे कि तुम हमारी पूजा करते थे।" (*सूर: यूनुस*-२९)

अन्य स्थान पर भी देखिये *सूर: अल-अहक़ाफ़* आयत ५ तथा ६, *सूर: मरियम*-८१ तथा ८२, *सूर: अल-अनकबूत*-२५, *सूर: अल कहफ़*-५२ आदि। एक यह अर्थ भी हो सकता है कि हमने तुम्हें अपनी पूजा करने के लिए कभी नहीं कहा था, इसलिए तुम ही झूठे हो। यह देवी-देवता यदि पत्थर तथा वृक्ष होंगे तो अल्लाह तआला उन्हें बोलने की शक्ति प्रदान करेगा, जिन्नात तथा शैतान होंगे तो कोई शंका ही नहीं है तथा यदि अल्लाह के पुण्यात्मा व्यक्ति होंगे, जिस प्रकार से लोग पुण्यात्मा व्यक्तियों, महात्मा एवं अल्लाह की निकटता प्राप्त लोगों को पुकारते हैं, उनके नाम का भोग तथा प्रसाद चढ़ाते हैं तथा उनकी क़ब्रों पर जाकर उनका उसी प्रकार मान-सम्मान करते हैं जिस प्रकार ईष्टदेव का, भय तथा आशा के भाव के साथ किया जाता है। तो अल्लाह तआला उनको हश्र के मैदान में मुक्ति प्रदान कर देगा तथा उनकी पूजा करने वालों को नरक में डाल दिया जायेगा। जैसाकि आदरणीय ईसा से अल्लाह तआला का प्रश्न तथा उनका उत्तर *सूर: मायद:* के अन्त में वर्णित है।

[1]जिस प्रकार स्वर्ग में ईमान वालों के विभिन्न पद होंगे, उसी प्रकार नरक में काफ़िरों की यातना में भिन्नता होगी। जो भटके हुए होने के साथ अन्य लोगों को भटकाने का कारण बने होंगे, उनकी यातना अन्यों की अपेक्षा तीव्र होगी।

(८९) तथा जिस दिन हम प्रत्येक समुदाय में उन्हीं में से उनके ऊपर गवाह खड़ा करेंगे तथा तुझे उन सब पर गवाह बनाकर लायेंगे ।[1] तथा हमने तुझ पर यह किताब उतारी है जिसमें हर बात का स्वच्छ वर्णन है[2] तथा मार्गदर्शन एवं कृपा तथा शुभसूचना है मुसलमानों के लिए।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِم مِّنْ أَنفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ ۚ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿٨٩﴾

(९०) नि:संदेह अल्लाह (तआला) न्याय का, भलाई का तथा निकट सम्बन्धियों के साथ सदव्यवहार करने का आदेश देता है तथा निर्लज्जता के कार्यों तथा दुराचारों एवं अत्याचार तथा क्रूरता से रोकता है।[3] वह

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾

---

[1]अर्थात प्रत्येक नबी अपने अनुयायियों पर गवाही देगा तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायी नबियों के विषय में गवाही देंगे कि ये सच्चे हैं, उन्होंने नि:संदेह तेरा सन्देश पहुँचा दिया था। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: निसा)

[2]किताब से तात्पर्य अल्लाह की किताब तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की व्याख्या अर्थात हदीस है। अपनी हदीसों को भी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह की किताब कहा है। जैसाकि उसैफ़ की कथा आदि में है। (देखिये सहीह बुख़ारी किताबुल मुहारेबीन बाब हल यामुरू इमाम रजुलन फ़यज़रेबुल हद ग़ायबन अन्ह, किताबुस सलात बाबु ज़िक्रल बैये वश शेराअे अलल मिम्बर फ़िल मस्जिद) तथा प्रत्येक वस्तु का अर्थ है भूत तथा भविष्य की वे सूचनायें, जिनका ज्ञान आवश्यक एवं लाभदायक है। उसी प्रकार मान्य तथा निषेध का विवरण तथा वे बातें जिन का धर्म एवं संसार तथा व्यवसाय एवं जीविका के सम्बन्ध में मनुष्य बाध्य है। क़ुरआन तथा हदीस दोनों में यह सब बातें स्पष्ट कर दी गयी हैं।

[3]न्याय का साधारण अर्थ निष्पक्ष निर्णय करना है अर्थात अपनों-बेगानों सबके साथ न्याय किया जाये। किसी के साथ शत्रुता तथा बैर अथवा प्रेम तथा सम्बन्ध के कारण न्याय के नियमों का उल्लंघन न हो। एक अन्य अर्थ संतुलन है अर्थात किसी मामले में अधिकता अथवा कमी न की जाये। यहाँ तक कि धर्म के विषय में भी। क्योंकि धर्म में अत्यधिकता अतिश्योक्ति है, जो अत्यधिक निन्दनीय है तथा कमी, धर्म के कार्य में आलस्य है यह भी अप्रिय है। उपकार का एक अर्थ सदव्यवहार, क्षमा है। दूसरा अर्थ

स्वयं तुमको शिक्षा दे रहा है, ताकि तुम शिक्षा प्राप्त करो।

(९१) तथा अल्लाह से किये हुए वचन को पूरा करो, जबकि तुम आपस में वचन तथा अनुबन्ध करो तथा सौगन्धों को उनकी दृढ़ता के पश्चात मत तोड़ो, जबकि तुम अल्लाह (तआला)

وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدتُّمْ وَلَا تَنقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ

आधिक्य के है अर्थात देय अधिकार से अधिक देना अथवा अनिवार्य कर्म से अधिक कर्म करना ।जैसे किसी की मज़दूरी सौ रूपये तय की है, परन्तु देते समय दस-बीस रूपये अधिक देना क्योंकि निर्धारित मज़दूरी सौ रूपये थी जो मज़दूर का वास्तविक अधिकार है तथा यह न्याय है। दस-बीस रूपये अधिक देना यह उपकार है। न्याय से समाज में शान्ति स्थापित होती है, परन्तु उपकार से अधिक प्रेमभाव तथा अपनापन उत्पन्न होता है । तथा अनिवार्य कर्म के पूर्णरूप से करने के उपरान्त ऐच्छिक कर्म का प्रबन्ध करना, आवश्यक कर्म से अधिक कर्म है जिससे अल्लाह तआला की विशेष निकटता प्राप्त होती है। उपकार का एक तीसरा अर्थ है पवित्र कर्म तथा इबादत की सुन्दरता। जिसको हदीस में «أَنْ تَعْبُدَ اللهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ». (अल्लाह की इबादत इस प्रकार करो कि जैसे तुम उसे देख रहे हो) कहा गया है إيتاء ذي القربى (सम्बन्धियों के अधिकारों को अदा करना अर्थात उनकी सहायता करना) इसे हदीस में सम्बन्ध का जोड़ना कहा गया है तथा इस पर अत्यधिक बल हदीस में दिया गया है। न्याय, तथा उपकार के वर्णन के पश्चात इसका अलग से वर्णन यह भी सम्बन्ध के जोड़ने के महत्व को स्पष्ट कर रहा है । فحشاء से तात्पर्य निर्लज्जता के कर्म हैं। आजकल निर्लज्जता इतना सामान्य हो गयी है कि उसका नाम संस्कृति, उन्नति तथा कला पड़ गया है अथवा “मनोरंजन” के नाम पर उसका औचित्य मान लिया गया है। परन्तु मात्र सुन्दर आवरण से किसी वस्तु की वास्तविकता नहीं बदली जा सकती, इसी प्रकार इस्लामी धार्मिक नियमों में बलात्कार तथा उसके साधन, नाच, गाने, नग्नता तथा फैशन को, स्त्री-पुरूष के निर्लज्जता पूर्ण मिश्रण तथा मिश्रित समाज तथा अन्य इसी प्रकार के कुकर्मों को निर्लज्जता कहा गया है, इनका कितना ही अच्छा नाम रख लिया जाये, पाश्चात्य देश से आयातित कुकर्म मान्यता नहीं प्राप्त कर सकते। مُنكر हर वह कार्य है जिसे धार्मिक मियमों से अप्रिय घोषित कर दिया गया है ।तथा بغيٌ का अर्थ अत्याचार तथा क्रूरता करना है। एक हदीस में बताया गया है कि सम्बन्ध विच्छेद तथा بغي ये दोनों अपराध अल्लाह को इतने अप्रिय हैं कि अल्लाह तआला की ओर से (परलोक के अतिरिक्त) दुनिया में भी उनके शीघ्र दण्ड की सम्भावना का भय रहता है। (इब्ने माजः किताबुज़ जोहद बाबुल बग़्ये)

عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۚ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩١﴾

-को अपना उत्तरदायी ठहरा चुके हो ।[1] तुम जो कुछ करते हो अल्लाह तआला उसे भली-भाँति जानता है ।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنكَاثًا تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَن تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ ۚ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ ۚ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٩٢﴾

(९२) तथा उस (स्त्री) की भाँति न हो जाना कि जिसने अपना सूत मज़बूत कातने के उपरान्त टुकड़े-टुकड़े तोड़ दिया,[2] कि तुम अपनी सौगन्धों को आपस में छल-कपट का कारण बनाओ[3] इसलिए कि एक गुट दूसरे गुट से ऊँचा हो जाये ।[4] बात केवल यही है कि इस वचन से अल्लाह तुम्हारी परीक्षा ले रहा है । नि:संदेह अल्लाह तआला तुम्हारे लिए

---

[1]शपथ एक तो वह है जो किसी संधि अथवा वचन के समय, उसे पक्का करने के लिए खायी जाती है । दूसरी शपथ वह है जो मनुष्य अपने रूप से किसी समय भी ले लेता है कि अमुक कार्य करूँगा अथवा नहीं करूँगा । यहाँ आयत में प्रथम वर्णित शपथ का तात्पर्य है कि तुमने सौगन्ध खायी है । क्योंकि द्वितीय वर्णित सौगन्ध के विषय में हदीस में आदेश दिया गया है कि कोई व्यक्ति किसी कार्य के लिए भी सौगन्ध खा ले, फिर देखे कि अधिक पुण्य दूसरे कर्म में है (अर्थात सौगन्ध के विरूद्ध करने में है) तो वह पुण्य का कार्य करे तथा सौगन्ध को तोड़कर उसका कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) अदा करे (सहीह मुस्लिम संख्या १२७२) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का व्यवहार भी यही था । (सहीह बुख़ारी संख्या ६६२३ तथा मुस्लिम संख्या १२६९)

[2]शपथ द्वारा दिया गया वचन को तोड़ देना ऐसा ही है जैसे कोई स्त्री सूत कातने के पश्चात उसे स्वयं ही टुकड़े-टुकड़े कर डाले । यह उपमा है ।

[3]अर्थात धोखा, छल-कपट का साधन बनाओ ।

[4] أربى का अर्थ अधिक है अर्थात जब तुम देखो कि तुम अधिक हो गये तो अपनी अधिक संख्या के गर्व में सौगन्ध तोड़ दो, जबकि सौगन्ध तथा सन्धि के समय वह गुट कमज़ोर था, परन्तु कमज़ोरी के उपरान्त भी वह निश्चिन्त था कि सन्धि के कारण हमें हानि नहीं पहुँचायी जायेगी । परन्तु तुम विश्वासघात तथा सन्धि को तोड़कर हानि पहुँचाओ । अज्ञान काल में चरित्रहीनता के कारण इस प्रकार सन्धि विच्छेद सामान्य रूप से व्याप्त था । मुसलमानों को इस चरित्रहीनता से रोका गया ।

क़ियामत के दिन हर उस वस्तु को स्पष्ट करके वर्णन कर देगा, जिसमें तुम मतभेद कर रहे थे ।

(९३) तथा यदि अल्लाह (तआला) चाहता तो तुम सबको एक मत बना देता परन्तु वह जिसे चाहे भटका देता है तथा जिसे चाहे मार्गदर्शन देता है । निःसंदेह तुम जो कुछ कर रहे हो उसकी पूछताछ की जाने वाली है ।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَلَتُسْئَلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

(९४) तथा तुम अपनी सौगन्धों को आपस के छल-कपट का साधन न बनाओ । फिर तो तुम्हारे पग अपनी स्थिरता के पश्चात डगमगा जायेंगे तथा तुम्हें कठोर दण्ड चखना पड़ जायेगा क्योंकि तुमने अल्लाह के मार्ग से रोक दिया तथा अत्यधिक घोर यातना दी जायेगी ।[1]

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝

(९५) तथा तुम अल्लाह के वादे को तुच्छ मूल्य के बदले न बेच दिया करो । याद रखो, अल्लाह

وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ

---

[1]मुसलमानों को पुनः उपरोक्त वचन भंग करने से रोका गया है कि कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे इस नैतिक पतन के कारण किसी के पग डगमगा जाये तथा काफ़िर तुम्हारा यह व्यवहार देखकर इस्लाम धर्म धारण करने से रूक जाये तथा इस प्रकार तुम लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोकने के अपराधी तथा दण्ड के अधिकारी बन जाओ । कुछ व्याख्याकारों ने أيمان [यमीन (सौगन्ध) के अर्थ में] का बहुवचन से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बैयअत (अर्थात वचन देना) तात्पर्य लिया है । अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की (*बैयअत*) अर्थात आप से किये वचन को तोड़कर फिर धर्म से न फिरना क्योंकि तुम्हारे धर्म परिवर्तन को देखकर अन्य भी इस्लाम धर्म धारण करने से रूक जायेंगे तथा इस प्रकार तुम दुगुनी यातना के अधिकारी बन जाओगे । (फ़तहुल क़दीर)

تَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٩٥﴾

के पास की वस्तु ही तुम्हारे लिए उत्तम है, यदि तुम में ज्ञान हो।

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

(९६) तुम्हारे पास जो कुछ है सब नाशवान है तथा अल्लाह के पास जो कुछ है स्थाई रहने वाला है। तथा धैर्य रखने वालों को हम अच्छे कर्मों का उत्तम बदला अवश्य प्रदान करेंगे।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيَاةً طَيِّبَةً ۖ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٧﴾

(९७) जो व्यक्ति पुण्य के कार्य करे नर हो अथवा नारी, और वह ईमानवाला हो तो हम उसे नि:संदेह सर्वोत्तम जीवन प्रदान करेंगे।[1] तथा उनके पुण्य के कार्यों का उत्तम बदला भी उन्हें अवश्य देंगे।

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿٩٨﴾

(९८) क़ुरआन पढ़ते समय धिक्कारे हुए शैतान से अल्लाह की शरण माँगा करो।[2]

إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطَانٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٩٩﴾

(९९) ईमानवालों तथा अपने प्रभु पर भरोसा रखने वालों पर उसका कदापि ज़ोर नही चलता।

---

[1]पवित्र जीवन से तात्पर्य सांसारिक जीवन है, इसलिए कि परलोक के जीवन का वर्णन अगले वाक्य में है तथा अर्थ यह है कि सदाचारी मुसलमान को सत्य संयमशील जीवन व्यतीत करने तथा अल्लाह की इबादत तथा आज्ञापालन एवं भक्ति तथा संतोष में जो स्वाद तथा मिठास प्रतीत होता है, वह एक काफ़िर तथा अवज्ञाकारी को दुनिया भर के सुख-सुविधाओं के उपरान्त भी प्राप्त नहीं होता, बल्कि वह एक व्यग्रता तथा अशान्ति का शिकार रहता है।

﴿ وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنْكًا ﴾

"जो मेरी याद से विमुख हुआ, उसका निर्वाह संकीर्ण होगा।" (सूर: *ताहा-१२४*)

[2]सम्बोधन यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है परन्तु सम्बोधित सम्पूर्ण मुसलमान हैं। अर्थात क़ुरआन पढ़ने के प्रारम्भ में (أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ) पढ़ा जाये।

إِنَّمَا سُلْطَٰنُهُۥ عَلَى ٱلَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُۥ وَٱلَّذِينَ هُم بِهِۦ مُشْرِكُونَ ﴿١٠٠﴾

(१००) हाँ, उसका प्रभाव उन पर अवश्य है जो उससे मित्रता करें तथा उसे अल्लाह का साझीदार बनायें ।

وَإِذَا بَدَّلْنَآ ءَايَةً مَّكَانَ ءَايَةٍ ۙ وَٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوٓا۟ إِنَّمَآ أَنتَ مُفْتَرٍۭ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾

(१०१) तथा जब हम किसी आयत के स्थान पर अन्य आयत बदल देते हैं तथा जो कुछ अल्लाह (तआला) उतारता है, उसे वह भली-भाँति जानता है, तो यह कहते हैं कि तू तो आक्षेप लगाने वाला है। बात यह है कि उनमें से अधिकतर जानते ही नहीं ।[1]

قُلْ نَزَّلَهُۥ رُوحُ ٱلْقُدُسِ مِن رَّبِّكَ بِٱلْحَقِّ لِيُثَبِّتَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟

(१०२) आप कह दीजिए कि उसे आपके पालनहार की ओर से जिब्रील सत्य के साथ लेकर आये हैं,[2] ताकि ईमान वालों को अल्लाह

---

[1]अर्थात एक आदेश निरस्त करके उसके स्थान पर दूसरा आदेश अवतरित करते हैं। जिसका भेद तथा कारण अल्लाह तआला भली-भाँति जानता है तथा उसके अनुसार आदेशों में फेरबदल करता है, तो काफ़िर कहते हैं कि यह कथन हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तेरा अपना गढ़ा हुआ है क्योंकि अल्लाह तआला ऐसा नहीं कर सकता। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उनके अधिकतर लोग अज्ञानी हैं, इसलिए यह निरस्त करने का कारण तथा भेद क्या जानें (और अधिक जानकारी के लिए देखिए सूर: *अल-बक़र:* आयत १०६ की व्याख्या)

[2]अर्थात यह क़ुरआन मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बनाया हुआ नहीं है। अपितु इसे आदरणीय जिब्रील जैसे महान फ़रिश्ते ने सत्यता के साथ प्रभु की ओर से उतारा है। जैसे अन्य स्थान पर है।

﴿ نَزَلَ بِهِ ٱلرُّوحُ ٱلْأَمِينُ ۝ عَلَىٰ قَلْبِكَ ﴾

"उसे सत्यात्मा (जिब्रील) ने तेरे हृदय पर उतारा है।" (सूर: *अल-शुअरा*-१९३,१९४)

وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٠٢﴾

(तआला) स्थिरता प्रदान करे[1] तथा मुसलमानों के लिए मार्गदर्शन तथा शुभसूचना हो जाये ।[2]

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ الَّذِىْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِىٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِىٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٣﴾

(१०३) तथा हमें भली-भाँति ज्ञात है जो काफ़िर कहते हैं कि उसे तो एक आदमी सिखाता है[3] उसकी भाषा जिसकी ओर यह संबन्धित कर रहे हैं अजमी (स्वच्छ अरबी भाषा नहीं) है। तथा यह क़ुरआन तो स्वच्छ अरबी भाषा में है ।[4]

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ

(१०४) जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों पर ईमान नहीं रखते, उन्हें अल्लाह की ओर

---

[1]इसलिए कि वे कहते हैं कि निरस्त तथा परिवर्तित दोनों ही प्रभु की ओर से हैं। इसके अतिरिक्त, निरस्तता के कारण एवं रहस्य भी जब उनके सामने आते हैं, तो उनके अन्दर और अधिक स्थायित्व एवं ईमान में दृढ़ता आती है।

[2]तथा यह क़ुरआन मुसलमानों के लिए मार्गदर्शन एवं शुभसूचना का साधन है क्योंकि क़ुरआन भी वर्षा के समान है, जिससे धरती का कुछ भाग अत्यधिक हरा-भरा होता है तथा कुछ में काँटें एवं सूखी घास के अतिरिक्त कुछ नहीं उगता। ईमानवालों का हृदय पवित्र एवं उज्जवल है, जो क़ुरआन की महिमा से तथा ईमान के प्रकाश से प्रकाशित होता है तथा काफ़िर का हृदय ऊसर भूमि की तरह है, जो कुफ़्र एवं मार्गभ्रष्टता (गुमराही) के अंधकार से परिपूर्ण है, जहाँ क़ुरआन की ज्योति का भी प्रभाव नहीं होता।

[3]कुछ दास थे जो तौरात तथा इंजील से अवगत थे, पहले वे यहूदी अथवा इसाई थे, फिर मुसलमान हो गये उनकी भाषा भी अस्वच्छ थी, मक्का के मूर्तिपूजक कहते थे कि अमुक दास मोहम्मद को क़ुरआन सिखाता है।

[4]अल्लाह तआला ने उत्तर में कहा कि यह जिस व्यक्ति, अथवा व्यक्तियों का नाम लेते हैं वह तो अरबी भाषा भी उचित ढंग से नहीं बोल सकते, जबकि क़ुरआन तो ऐसी स्वच्छ अरबी भाषा में है जो प्रभावशाली, हृदयस्पर्शी एवं मार्मिक वर्णन में अतुलनीय है तथा चैलेंज के उपरान्त भी इसके समान एक अंश भी बनाकर प्रस्तुत नहीं कर सकते। अरबी भाषा में उस व्यक्ति को अजमी (गूँगा) कहते थे जो स्वच्छ एवं सरल भाषा बोलने योग्य नहीं होता था तथा ग़ैर अरबी भाषी को भी अजमी कहा जाता है कि अजमी भाषाओं में प्रवाह तथा प्रभाव में अरबी भाषा की तुलना नहीं कर सकतीं।

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝١٠٤

से भी मार्गदर्शन प्राप्त नहीं होता तथा उनके लिए दुखदायी यातना है।

اِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝١٠٥

(१०५) मिथ्या आरोप तो वही लगाते हैं जिन्हें अल्लाह (तआला) की आयतों पर ईमान नहीं होता। और यही लोग झूठे हैं।[1]

مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِهٖٓ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ وَلٰكِنْ مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١٠٦

(१०६) जो व्यक्ति अपने ईमान के पश्चात अल्लाह से कुफ़्र करे उसके सिवाय जिसे बाध्य किया जाये तथा उसका दिल ईमान पर स्थिर हो,[2] परन्तु जो लोग खुले दिल से कुफ़्र करें, तो उन पर अल्लाह का क्रोध है तथा उन्हीं के लिए बहुत बड़ी यातना है।[3]

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ

(१०७) यह इसलिए कि उन्होंने साँसारिक जीवन को पारलौकिक जीवन से प्रियतर समझा।

---

[1]तथा हमारा पैग़म्बर ईमानदारों का प्रमुख तथा उनका अगुवा है, वह किस प्रकार अल्लाह पर झूठ बाँध सकता है कि यह किताब अल्लाह की ओर से उस पर अवतरित न हुई हो तथा वह झूठ ही कह दे कि यह किताब मुझ पर अल्लाह की ओर से अवतरित हुई है। इसलिए झूठा हमारा पैग़म्बर नहीं, वे स्वयं झूठे हैं जो क़ुरआन के अल्लाह की ओर से अवतरित होने को स्वीकार नहीं करते।

[2]ज्ञानियों की इस बात पर सहमति है कि जिस व्यक्ति को कुफ़्र के लिए बाध्य किया जाये तथा वह प्राण रक्षा के लिए कर्म तथा वचन से कुफ़्र करे, जबकि उसका हृदय ईमान पर दृढ़ है, तो वह काफ़िर नहीं होगा, न उसकी पत्नी उससे अलग होगी तथा न उस पर अन्य कुफ़्र के आदेश लागू किये जायेंगे। क़ुर्तबी का यह कथन है। (फ़तहुल क़दीर)

[3]यह धर्म त्याग का दण्ड है कि वह अल्लाह के क्रोध तथा घोर यातना के अधिकारी होंगे तथा उसका साँसारिक दण्ड हत्या है। जैसाकि हदीस में है (अन्य जानकारी के लिए देखिए *सूरः बक़रः* आयत २१७ तथा २५६ की व्याख्या)

لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠٧﴾

नि:संदेह अल्लाह (तआला) काफ़िर लोगों का मार्गदर्शन नहीं करता ।[1]

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ۚ وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٠٨﴾

(१०८) यह वे लोग हैं जिनके दिलों पर तथा जिनके कानों एवं जिनकी आँखो पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है तथा यही लोग अचेत हैं ।[2]

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٠٩﴾

(१०९) कोई संदेह नहीं कि यही लोग आख़िरत में अधिक हानि उठाने वाले हैं ।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا ۙ إِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٠﴾

(११०) जिन लोगों ने परीक्षा में डाले जाने के पश्चात (धार्मिक कारणों से) स्थानान्तरण किया फिर धर्मयुद्ध किया एवं धैर्य का प्रदर्शन किया । नि:संदेह तेरा प्रभु इन बातों के पश्चात उन्हें क्षमा करने वाला तथा कृपा करने वाला है ।[3]

---

[1]यह ईमान के पश्चात कुफ़्र का मार्ग अपनाने (अधर्मी हो जाने) का कारण है कि उन्हें एक तो दुनिया से प्रेम है । दूसरे अल्लाह के दरबार में यह मार्गदर्शन के योग्य ही नहीं हैं ।

[2]तो ये शिक्षा-दीक्षा की बातें सुनते हैं न उन्हें समझते हैं तथा न वे निशानियाँ (लक्षण) देखते हैं जो उन्हे सत्य की ओर ले जाने वाली हैं बल्कि वे ऐसे अवचेतन में घिरे हुए हैं जिसने प्रकाश के मार्ग उनके लिए बन्द कर दिये हैं ।

[3]यह मक्के के उन मुसलमानों का वर्णन है जो कमज़ोर थे तथा इस्लाम धर्म धारण करने के कारण काफ़िरों के अत्याचार तथा क्रूरता का निशाना बने रहे । अन्तत: उन्हें स्थानान्तरण का आदेश दिया गया तो वे अपने सगे सम्बन्धियों, देश तथा धरती एवं माल तथा भूमि सब कुछ छोड़कर इथोपिया अथवा मदीना चले गये, फिर जब काफ़िरों के साथ युद्ध का अवसर आया तो वीरता पूर्ण लड़ने के लिए धर्मयुद्ध में पूर्णरूप से भाग लिया तथा फिर उस मार्ग की कठिनाईयों एवं दुखों को धैर्य के साथ सहन किया । इन सभी बातों के पश्चात नि:संदेह उनके लिए तुम्हारा प्रभु दयालु एवं कृपालु है अर्थात प्रभु की दया एवं कृपा की प्राप्ति के लिए ईमान तथा पुण्य के कर्म का होना आवश्यक है । जैसाकि वर्णित मुहाजिरों ने ईमान तथा कर्म का सर्वोत्तम प्रदर्शन किया, तो प्रभु की दया एवं कृपा से वे सफल हुए ।

(१११) जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए लड़ता-झगड़ता आयेगा[1] तथा प्रत्येक व्यक्ति को उसके किये का पूरा बदला दिया जायेगा तथा लोगों पर कदापि अत्याचार न किया जायेगा ।[2]

يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَن نَّفْسِهَا وَتُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١١١﴾

(११२) तथा अल्लाह (तआला) उस बस्ती का उदाहरण प्रस्तुत करता है, जो पूर्ण सुख-शान्ति से थी, उसकी जीविका उसके पास सम्पन्नता के साथ प्रत्येक मार्ग से चली आ रही थी। फिर उसने अल्लाह (तआला) के अनुकम्पाओं का इंकार किया, तो अल्लाह (तआला) ने उसे भूख तथा भय का स्वाद चखा दिया, जो बदला था उनके करतूतों का ।[3]

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّن كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللَّهِ فَأَذَاقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١١٢﴾

---

[1]अर्थात कोई अन्य किसी की सहायता के लिए नहीं आयेगा न पिता, न भाई,न पुत्र, न पत्नी, न कोई अन्य। बल्कि एक-दूसरे से भागेंगे। भाई-भाई से, पुत्र माता-पिता से, पति-पत्नी से भागेगा। प्रत्येक व्यक्ति को केवल अपनी ही चिन्ता होगी जो उसे दूसरे से निश्चिन्त कर देगी।

[2]अर्थात पुण्य के फल में कमी कर दी जाये तथा बुराई का प्रतिकार बढ़ा दिया जाये ऐसा नहीं होगा, किसी पर तनिक भी अत्याचार न होगा। बुराई का केवल उतना ही बदला मिलेगा, जितना होगा। परन्तु पुण्य का बदला अल्लाह तआला ख़ूब बढ़ा-चढ़ाकर कर देगा तथा यह उसके उपकार एवं दया का प्रदर्शन होगा जो क़ियामत के दिन ईमान वालों के लिए होगा।

[3]अधिकतर व्याख्याकारों ने इस ग्राम से तात्पर्य मक्का लिया है। अर्थात इसमें मक्का तथा मक्कावासियों का वर्णन किया गया है तथा यह उस समय हुआ जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके लिए शाप की प्रार्थना की।

«اللَّهُمَّ اشْدُدْ وَطْأَتَكَ عَلَىٰ مُضَرَ، وَاجْعَلْهَا عَلَيْهِمْ سِنِينَ كَسِنِي يُوسُفَ»

"हे अल्लाह ! मुदर (क़बीले) पर अपनी पकड़ कड़ी कर तथा उन पर अकाल को उस प्रकार से डाल जिस प्रकार से आदरणीय यूसुफ के समय में मिस्र में हुआ। (सहीह बुख़ारी संख्या ४८२१, सहीह मुस्लिम संख्या २१५६)"

(११३) तथा उनके पास उन्हीं में से रसूल पहुँचा, फिर भी उन्होंने उसे झुठलाया, तो उन्हें प्रकोप ने आ पकड़ा [1] तथा वे थे भी अत्याचारी ।

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١١٣﴾

(११४) जो कुछ उचित (हलाल) तथा पवित्र जीविका अल्लाह ने तुम्हें प्रदान कर रखा है, उसे खाओ तथा अल्लाह के अनुकम्पा की कृतज्ञता व्यक्त करो, यदि तुम उसी की इबादत करते हो ।[2]

فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاشْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١١٤﴾

(११५) तुम पर केवल मृत तथा रक्त एवं सूअर का माँस तथा जिस चीज़ पर अल्लाह के सिवाय अन्य का नाम लिया जाये हराम (निषेध) है, [3]

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنزِيرِ وَمَا أُهِلَّ

अत: अल्लाह तआला ने मक्के की शान्ति को भय में तथा सम्पन्नता को भुखमरी में बदल दिया । यहाँ तक कि उनका यह हाल हो गया कि हड्डियाँ तथा वृक्षों के पत्ते खाकर जीवन निर्वाह करना पड़ा । तथा कुछ व्याख्याकारों का विचार है कि यह अनिश्चित ग्राम है तथा उदाहरण के रूप में यह बात कही गई है कि उपकार को अस्वीकार करने वालों का यही हाल होगा, वे जहाँ भी हों तथा जब भी हों । इसके इस सामान्य भावार्थ से अधिकाँश व्याख्याकारों को भी इंकार नहीं है, यद्यपि इस अवतरण का कारण उनके निकट विशेष है ।

[1]इस यातना से तात्पर्य वही यातना, भय तथा भूख है जिसका वर्णन इससे पूर्व की आयत में है अथवा इससे तात्पर्य काफ़िरों की वह हत्या है जो बद्र के युद्ध में मुसलमानों के हाथों हुई ।

[2]इसका अर्थ यह हुआ कि वैध तथा पवित्र वस्तुओं को छोड़कर निषेधित तथा अपवित्र वस्तुओं का प्रयोग तथा अल्लाह को छोड़कर किसी अन्य की इबादत करना, यह अल्लाह के उपकारों की कृतघ्नता है ।

[3]यह आयत इससे पूर्व तीन बार गुज़र चुकी है । *सूर: अल-बकर:*-१७३, *सूर: अल-मायद:*-३, तथा *सूर: अल-अनआम*-१४५ में । यह चौथा स्थान है जहाँ अल्लाह तआला ने पुन: वर्णन किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इस आयत में जिन चार निषेधित वस्तुओं का वर्णन है, उनसे अल्लाह तआला मुसलमानों को अति बलपूर्वक बचाना चाहता है । इसकी आवश्यक व्याख्या पूर्व में की जा चुकी है । फिर भी इसमें ﴿وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ﴾ (जिस वस्तु पर अल्लाह के अतिरिक्त अन्य का नाम पुकारा जाये) जो

चौथा प्रकार है इसके भावार्थ में तर्क, कल्पना एवं व्याख्या करके शिर्क के लिए चोर दरवाज़ा खोजे जाते हैं। इसलिए उसकी कुछ और व्याख्या प्रस्तुत है।

जो पशु अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को अर्पित किया जाये, उसके विभिन्न प्रकार हैं। एक प्रकार यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की निकटता तथा प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए उसकी बलि दी जाये तथा बलि चढ़ाते समय उसी देवता, मूर्ति अथवा महात्मा का नाम लिया जाये, जिसको प्रसन्न करने का उद्देश्य हो। दूसरा प्रकार यह है कि उद्देश्य तो अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की प्रसन्नता हो परन्तु बलि अल्लाह के नाम पर दी जाये, जिस प्रकार समाधियों के पुजारियों में यह कार्य सामान्य रूप से है। वह पशुओं को महात्माओं के नाम से नामांकित करते हैं। जैसे यह बक़रा अमुक पीर का है, यह गाय अमुक पीर की है, यह पशु ग्यारहवीं के लिए अर्थात शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी के लिए है आदि। तथा उनकी बलि बिस्मिल्लाह पढ़कर ही देते हैं, इसलिए वे कहते हैं कि पहली प्रकार अवश्य निषेधित है, परन्तु यह दूसरी प्रकार निषेधित नहीं, बल्कि मान्य है क्योंकि यह अल्लाह के अतिरिक्त किसी के नाम पर बलि नहीं दिया गया है और इस प्रकार शिर्क का मार्ग खोला गया है। जबकि विचारकों ने इस दूसरी प्रकार को भी निषेधित कहा है। इसलिए कि यह भी ﴿وَمَآ أُهِلَّ لِغَيۡرِ ٱللَّهِ بِهِۦ﴾ में सम्मिलित है, अतः बैदावी की व्याख्या में है "हर वह पशु जिस पर अल्लाह के अतिरिक्त अन्य का नाम पुकारा जाये, निषेध है, यद्यपि बलि देते समय उस पर अल्लाह ही का नाम लिया गया हो। इसलिए धर्मज्ञानी सहमत हैं कि मुसलमान यदि अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की निकटता प्राप्त करने के लिए पशु की बलि देगा तो वह विधर्मी हो जायेगा तथा उसकी बलि विधर्मी की बलि होगी।" तथा हनफ़ी विचार की प्रख्यात पुस्तक 'दुर्रे मुख़्तार' में है, "किसी अधिकारी तथा उसी प्रकार किसी उच्च अधिकारी के आगमन पर (उसकी मेहमानी के लिए नहीं अपितु उसे खुश करने अथवा उसके सम्मान स्वरूप) पशु की बलि दी जाये, तो वह निषेधित होगा, इसलिए कि वह "وما أهل لغير الله به" में आ गया, यद्यपि उस पर अल्लाह ही का नाम लिया गया हो तथा अल्लामा शामी ने इस पर बल दिया है।" (किताबुल ज़बाएह प्राचीन प्रकाशन १२७७ हिजरी, पृष्ठ २२७ फ़तावा शामी भाग ५, पृष्ठ २०३, मेमनीयः प्रकाशन मिस्र) परन्तु कुछ विचारक इस दूसरे प्रकार को "وما أهل لغير الله به" का अर्थ तथा इसमें सम्मिलित नहीं समझते तथा अल्लाह के सिवाय अन्य की निकटता प्राप्त करने के कारण इसे निषेधित समझते हैं। अर्थात निषेध होने में कोई मतभेद नहीं। केवल तर्क तथा प्रमाण प्रस्तुत करने के ढंग में मतभेद है। इसके अतिरिक्त यह दूसरा प्रकार ﴿وَمَا ذُبِحَ عَلَى ٱلنُّصُبِ﴾ (जो मूर्तियों के निकट अथवा स्थानों पर बलि चढ़ायी जायें) में भी सम्मिलित है। जिसे *सूरः अल-मायदः* में निषेधित में वर्णन किया गया है। तथा हदीसों से भी ज्ञात होता है कि आस्ताना, दरबारों, मन्दिरों तथा दैवी स्थानों पर बलि चढ़ाये गये पशु निषेध हैं, इसलिए कि वहाँ बलि चढ़ाने का अथवा बाँटने का उद्देश्य अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की निकटता प्राप्त करनी है।

لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٥﴾

फिर भी यदि कोई व्यक्ति विवश कर दिया जाये न वह अत्याचारी हो एवं न अतिकारी हो, तो नि:संदेह अल्लाह क्षमा करने वाला तथा कृपा करने वाला है।

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿١١٦﴾

(११६) तथा किसी चीज़ को अपने मुख से झूठ ही न कह दिया करो कि यह उचति (हलाल) है तथा यह निषेध (हराम) है कि अल्लाह पर मिथ्यारोपण कर दो,[1] नि:संदेह अल्लाह (तआला) पर मिथ्यारोपण करने वाले सफलता से वंचित ही रहते हैं।

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۠ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١٧﴾

(११७) उन्हें अति तुच्छ लाभ प्राप्त होता है तथा उनके लिए ही कष्टदायी यातनायें हैं।

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا

(११८) तथा यहूदियों पर जो कुछ हमने निषेध किया था, उसे हम पहले ही से आप को सुना

एक हदीस में है, एक व्यक्ति ने आकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि मैंने मन्नत मानी है कि बवाना के स्थान पर मैं ऊँट की बलि चढ़ाऊँगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि क्या वहाँ अज्ञान काल की मूर्तियों में से कोई मूर्ति थी जिसकी पूजा की जाती थी? लोगों ने बताया नहीं, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि वहाँ उनके धार्मिक उत्सव में से कोई उत्सव तो नहीं मनाया जाता था? लोगों ने उसका भी न में उत्तर दिया, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रश्नकर्त्ता को मन्नत पूरी करने की अनुमति दी। (अबू दाऊद किताबुल ऐमान वन्नज़ूर, बाब मायूमर, बिहि मिन वफ़ाइन्नज़्र) इससे ज्ञात हुआ कि मूर्तियों के हटाये जाने के पश्चात भी निर्वासित आस्तानों पर जाकर पशुओं की बलि चढ़ाना निषेध है, तो उसका क्या कहना जबकि उन आस्तानों, दरबारों, मन्दिरों तथा दैवी स्थलों पर जाकर बलि चढ़ाये जायें जो पूजा-पाठ, भोग-प्रसाद के लिए सामान्य घोषित स्थल हैं।

[1]यह संकेत है उन पशुओं की ओर जो वह मूर्तियों के नाम अर्पित करके उनको अपने लिए निषेध कर लेते थे। जैसे बहीर:, साएब:, वसील: एवम् हाम आदि। (देखिये सूर: *अल-मायद:*-१०३ तथा सूर: *अल-अनाम*-१३९ से १४९ तक की व्याख्या)

चुके हैं,[1] हमने उन पर अत्याचार नहीं किया, अपितु वे स्वयं अपने प्राणों पर अत्याचार करते रहे।

مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٨﴾

(११९) जो कोई अज्ञानतावश बुरे कर्म करे, फिर उसके पश्चात तौबा (क्षमा-याचना) कर ले तथा सुधार भी कर ले तो फिर आपका प्रभु नि:संदेह बड़ा क्षमा करने वाला तथा अत्यन्त दयालु है।

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾

(१२०) नि:संदेह इब्राहीम अगुवा[2] एवं अल्लाह तआला के आज्ञापालन करने वाले एकाग्र नि:स्वार्थ थे। तथा वह मिश्रणवादियों में से न थे।

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ۗ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٠﴾

(१२१) अल्लाह तआला के प्रदान किये हुए उपहारों के कृतज्ञ थे, अल्लाह (तआला) ने उन्हें निर्वाचित कर लिया था तथा उन्हें मार्गदर्शन दे दिया था।

شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ۗ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٢١﴾

(१२२) तथा हमने उन्हें दुनिया में भी अच्छाई दी, तथा नि:संदेह वह आख़िरत में भी नेक लोगों में से हैं।

وَاٰتَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۗ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٢٢﴾

(१२३) फिर हमने आप की ओर प्रकाशना (वह्यी) भेजी कि आप इब्राहीम हनीफ़ के मत

ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۗ وَمَا كَانَ

---

[1]देखिये सूर: *अल-अनाम*-१४६ की व्याख्या, इसके अतिरिक्त सूर: *अल-निसा*-१६० में भी इस का वर्णन है।

[2]'उम्मत' का अर्थ मुखिया तथा अगुवा भी है जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है तथा उम्मत का अर्थ अनुयायी भी है। इस आधार पर आदरणीय इब्राहीम का अस्तित्व एक उम्मत के बराबर था। (उम्मत के अर्थ के लिए सूर: हूद-८ की व्याख्या देखिये)

مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٣﴾

का अनुसरण करें ।[1] और वह मिश्रणवादियों (अनेकेश्वर के पुजारियों) में न थे ।

إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٢٤﴾

(१२४) शनिवार के दिन (के महत्व) को तो केवल उन लोगों के लिए ही आवश्यक किया गया था, जिन्होंने उसमें मतभेद किया था,[2] बात यह है कि आपका प्रभु स्वयं ही उनमें उनके मतभेद का निर्णय क़ियामत के दिन करेगा ।

---

[1]'मिल्लत' का अर्थ है, ऐसा धर्म जिसे अल्लाह तआला ने अपने किसी नबी के द्वारा लोगों के लिए उचित तथा अनिवार्य किया है । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसके उपरान्त कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सभी नबियों सहित आदम की संतान के सरदार हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इब्राहीम के धार्मिक नियमों का अनुसरण करने के लिए कहा गया है, जिससे आदरणीय इब्राहीम के महत्व एवं विशेषता की पुष्टि होती है । वैसे मौलिक रूप से सभी नबियों के धार्मिक नियम एवं मत एक ही रहे हैं, जिसमें रिसालत के साथ अद्वैत तथा आख़िरत को आधार भूत स्थान प्राप्त है ।

[2]इस मतभेद का रूप क्या है ? इसकी व्याख्या में मतभेद है । कुछ कहते हैं कि आदरणीय मूसा ने उनके लिए शुक्रवार का दिन निर्धारित किया था, परन्तु इस्राईल की संतान ने उनका विरोध किया तथा शनिवार का दिन आदर तथा इबादत के लिए चयन किया । अल्लाह तआला ने फ़रमाया मूसा ! उन्होंने जो दिन चयन किया है, वही दिन रहने दो । कुछ कहते हैं कि अल्लाह तआला ने उन्हें आदेश दिया था कि सम्मान के लिए सप्ताह में कोई एक दिन निर्धारित कर लो जिसके निर्धारण में उनमें आपस में मतभेद हुआ । परन्तु यहूदियों ने अपने विचार से शनिवार का दिन तथा ईसाईयों ने रविवार का दिन निर्धारित कर लिया । तथा शुक्रवार का दिन अल्लाह तआला ने मुसलमानों के लिए विशेष कर दिया । तथा कुछ कहते हैं कि ईसाईयों ने रविवार का दिन यहूदियों के विरोध भावना से अपने लिए निर्धारित किया था, इसी प्रकार इबादत के लिए उन्होंने अपने को यहूदियों से अलग रखने के लिए बैतुल मोकद्दस के पूर्वी भाग को क़िबला के रूप में प्रयोग किया । शुक्रवार का दिन अल्लाह तआला के अपनी ओर से मुसलमानों के लिए निर्धारित करने का वर्णन हदीस में विद्यमान है । (देखिये सहीह बुख़ारी किताबुल जुमा, बाब हिदायत हाज़ेहिल उम्मत, लेयोमिल जुमुअः, तथा सहीह मुस्लिम वर्णित अध्याय)

ادْعُ إِلَىٰ سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ ۖ وَجَادِلْهُم بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١٢٥﴾

(१२५) अपने प्रभु की ओर लोगों को विवेक तथा उत्तम शिक्षा के साथ बुलायें तथा उनसे भली प्रकार से बात करें,[1] नि:संदेह आप का प्रभु अपने मार्ग से भटकने वालों को भी भली-भाँति जानता है तथा वह मार्ग पर चलने वालों से भी पूर्ण रूप से परिचित है ।[2]

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُم بِهِ ۖ وَلَئِن صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصَّابِرِينَ ﴿١٢٦﴾

(१२६) तथा यदि बदला लो भी तो बिल्कुल उतना ही जितना दुख तुम्हें पहुँचाया गया हो, तथा यदि धैर्य रखो तो नि:संदेह धैर्यवानों के लिए यही उत्तम है ।[3]

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ ۚ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٧﴾

(१२७) आप धैर्य रखें बिना अल्लाह की कृपा से आप धैर्य रख ही नहीं सकते तथा उनकी अवस्था से दुखी न हों तथा जो छल-कपट यह करते हैं, उनसे संकुचित न हों ।[4]

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوا وَّالَّذِينَ هُم مُّحْسِنُونَ ﴿١٢٨﴾

(१२८) विश्वास करें कि अल्लाह (तआला) परहेज़गारों तथा पुण्य कार्य करने वालों के साथ है ।

---

[1]इसमें धर्म प्रचार एवं प्रसार के नियम वर्णित किये गये हैं जो हिक्मत, सत्य भाषण, प्रेम तथा विनम्रता पर आधारित हैं । उत्तम विवाद, तर्क-वितर्क तथा कड़ाई एवं कटुता से बचते हुए कोमल तथा प्रेमपूर्ण भाव का प्रयोग करना है ।

[2]अर्थात आप का कार्य वर्णित नियमों के अनुसार शिक्षा-दीक्षा देना है, सत्य मार्ग पर चला देना, यह केवल अल्लाह के अधिकार में है तथा वह जानता है कि मार्गदर्शन प्राप्त करने वाला कौन है तथा कौन नहीं ?

[3]इसमें यद्यपि बदला लेने की आज्ञा है परन्तु अति नहीं, वरन यह स्वयं अत्याचार हो जायेगा, फिर भी क्षमा कर देने तथा धैर्य का मार्ग अपनाने को अधिक श्रेष्ठ बताया गया है ।

[4]इसलिए कि अल्लाह तआला उनके षडयन्त्रों के विरोध में ईमान वालों तथा अल्लाह से भय रखने वालों एवं सत्कर्मियों के संग है तथा जिसके साथ अल्लाह हो, उसे दुनिया वालों की चाल हानि नहीं पहुँचा सकती जैसाकि इसके पूर्व की आयत में है ।